आनन्द-पुस्तक-माला का सप्तम पुष्प

शेक्सपियर

(महाकवि के काव्य का समालोचानात्मक परिचय)

लेखक

श्रीसूर्य्यनारायणसिंह

विद्यालंकार, विशारद

प्रकाशक

आनन्द-पुस्तक-माला-कार्यालय, पूर्णियाँ

प्रथमावृत्ति
१०००

१९८६

मूल्य
॥=)
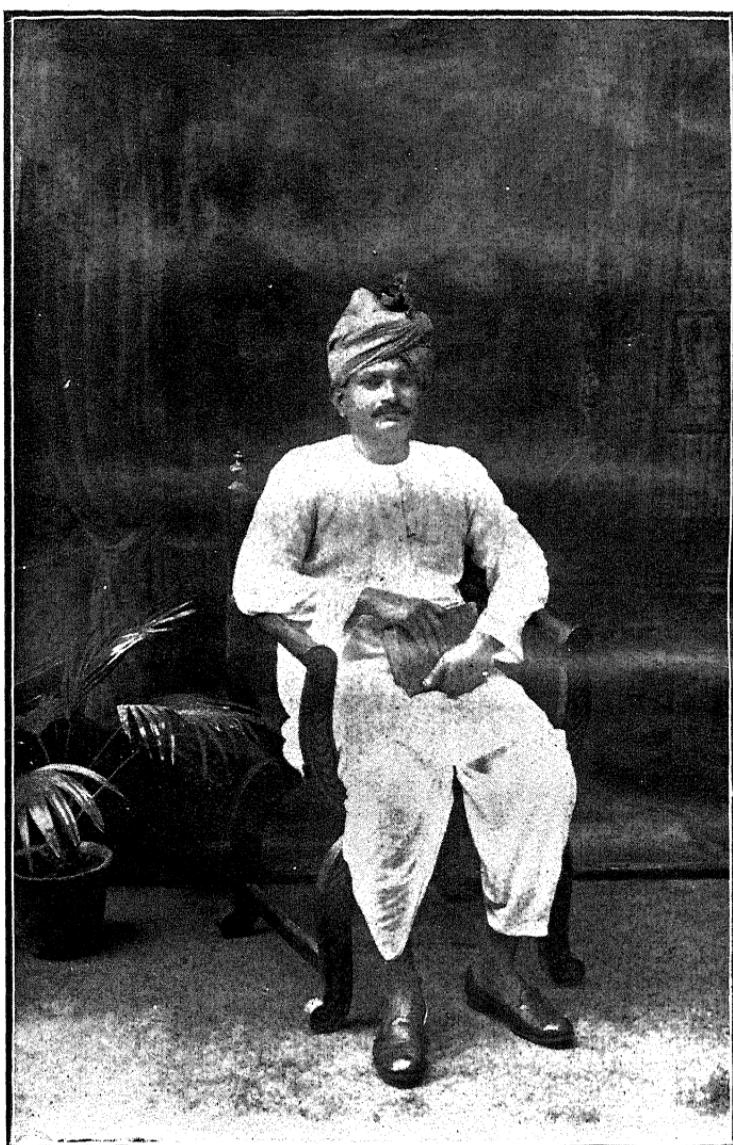
श्रीयुत रामनारायणजी यादव

समर्पण

साहित्य-कुञ्ज के मौजी मिलिन्द

श्रीयुत रामनारायणजी यादव

धमदाहा, जिला पूर्णियाँ

के

कर-कमलों में

'शेक्सपियर'

लेखक-द्वारा

सप्रेम समर्पित

है।

HINDUSTANI ACADEMY
Hindi Section
Library No. ....
Date of Receipt..........

निवेदन

कुछ महीनों पहले मुझे हिन्दी के ख्यातनामा लेखक, कवि एवं सुप्रसिद्ध 'बालक' और अब 'युवक' के सम्पादक अपने श्रद्धेय मित्र श्री पं० रामवृक्षजी शर्मा 'बेनीपुरी' के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आपकी संगति से मेरे हृदय-क्षेत्र में अकथनीय परिवर्त्तन हुआ। आपका जीवन आनन्द-मय और सार्थक है। आप केवल कवि ही नहीं हैं; अच्छे लेखक, सुयोग्य सम्पादक, पक्के कार्यकर्त्ता, दृढ़ सुधारक और अपने लेखक तथा कवि भाइयों के उत्साह-वर्द्धक भी हैं।

एक दिन पुस्तक लिखने-पढ़ने की बात चली तो, आपने बड़े-बड़े अँगरेजी कवियों की जीवनियों का हिन्दी में लिखा जाना अत्यावश्यक बतलाया। आपने उसी क्षण मुझे कुछ कवियों की छोटी-छोटी जीवनियाँ लिखने को कहा। संयोग से थोड़े ही दिनों के बाद मुझे शेक्सपियर और मिल्टन आदि कवियों के ग्रन्थों और जीवन-चरित्रों को अध्ययन करने का पूरा अवसर मिला। अध्ययन से उन कवियों का महत्त्व मेरे हृदय में बढ़ता गया। यहाँ तक बढ़ा कि अन्त में मुझे इच्छा हुई कि इनके जीवन की कुछ बातें लिखकर अपने हिन्दी-पाठक-वृन्द के सम्मुख उपस्थित करूँ। मेरे प्रयत्न से किसी को कुछ लाभ होगा, या नहीं, इसमें मुझे पूरी शंका थी; पर जब मैंने साधारण मनुष्यों की जीवनियों से अनेकों पुरुषों को अनुपम लाभ उठाते देखा, तो मुझे विश्वास हुआ कि मेरे प्रयत्न से भी लोगों को अवश्य लाभ होगा। साथ ही मुझे प्रिय 'बेनीपुरी' जी का विचार स्मरण था। बस एक प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई और शीघ्र महाकवि शेक्सपियर की संक्षिप्त जीवनी और उनकी मुख्य-मुख्य कविताओंकी समालोचना के साथ जीवन-सम्बन्धी कुछ बातें, इसछोटी-सी पुस्तक में लिख-कर पाठक-वृन्द के सामने उपस्थित होने का साहस

हो गया ; अतः बेनीपुरीजी का मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूँ। साथ ही अपने मित्र श्रीबुद्धिनाथजी झा 'कैरव' और श्रीयुत पं० आगर शर्मा जी के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता, जिनसे मुझे इस काम में बड़ी सहायता मिली है।

सबसे बढ़कर मैं पूज्यास्पद आचार्य श्रीयुत बदरीनाथजी वर्मा का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपने अमूल्य समय का कुछ भाग मेरी इस पुस्तिका के देखने में लगाकर सुन्दर और विवेक-पूर्ण भूमिका लिखी और इस पुस्तिका के महत्त्व को अत्यधिक बढ़ा देने की कृपा की है।

अन्त में मैं यह आशा कर निवेदन समाप्त करता हूँ कि यदि मेरे इस प्रयत्न से पाठकों को थोड़ा भी लाभ हुआ तो मैं अति शीघ्र दूसरे कवियों की जीवनियाँ भी लिखकर उनकी सेवा में उपस्थित होऊँगा।

—लेखक
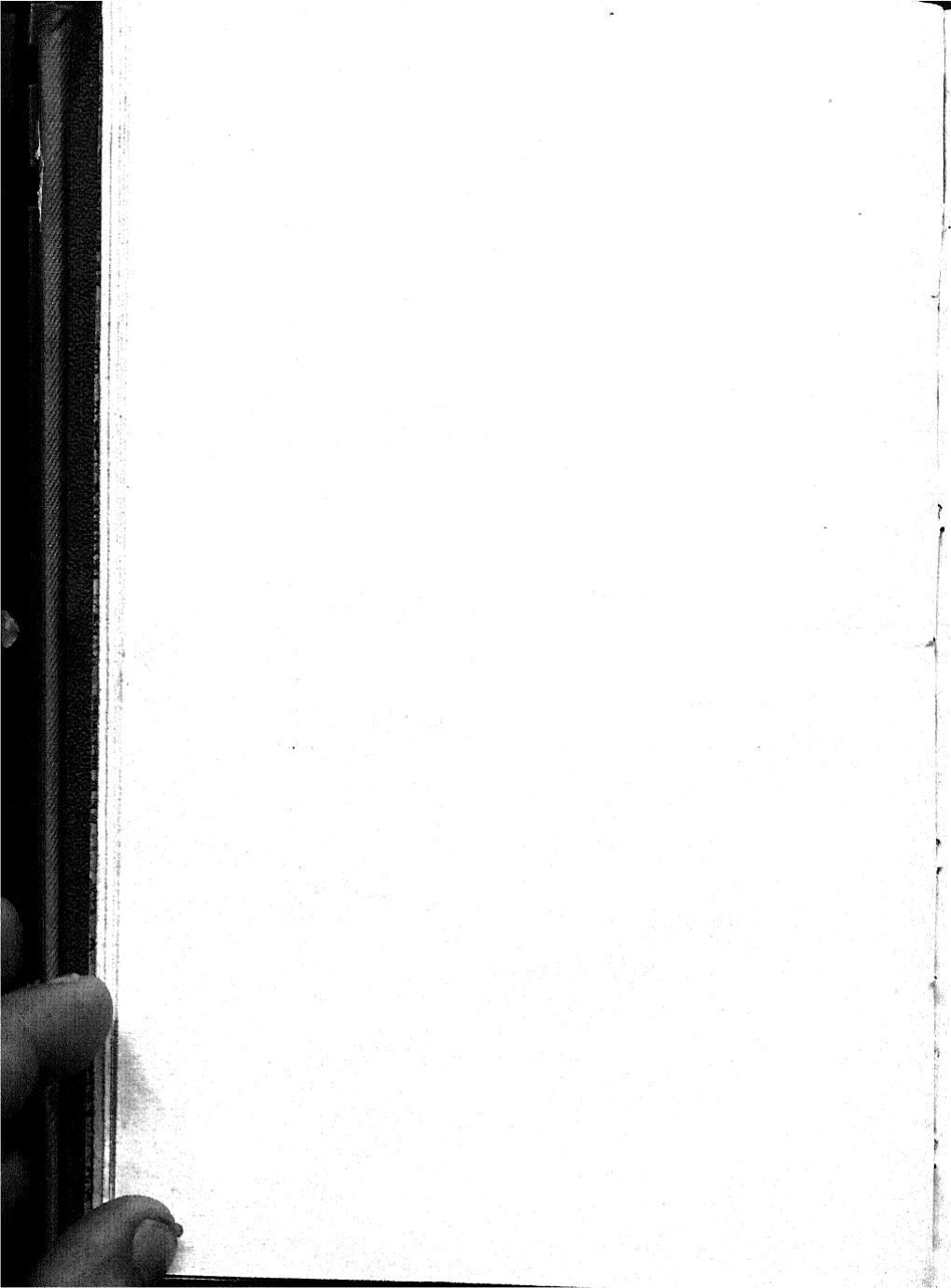
भूमिका

महाकवि शेक्सपियर संसार की उन विभूतियों में हैं, जिनका नाम और यश सदा अजर-अमर रहेगा। अंग्रेजों का साम्राज्य पृथिवी-तल से उठ सकता है; पर शेक्सपियर ने अपनी अतुलनीय कवित्त्व-शक्ति, अनुपम रचना-कौशल और मानव-हृदय के गंभीरतम अन्तस्तल तक प्रवेश करनेवाली अन्तर्दृष्टि के सहारे सारे भूमण्डल पर जो साम्राज्य स्थापित किया है, वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। उसके किञ्चिदपि अंग-भंग या जर्जर होने की तनिक भी सम्भावना नहीं की जा सकती। शेक्स-

पियर की कविताएँ यदि उसके हृदय के अन्तर्निहित भावों को व्यक्त करती हैं, तो उनके नाटक मानव-जीवन-सम्बन्धी बहुविध व्यापक ज्ञान को प्रकट करते हैं। उसका हृदय वास्तव में बड़ा ही स्वच्छ, बड़ा ही उदार था। उसकी विशालता में सारे संसार के लिये स्थान था। केवल राजे-महाराजे, सम्राट्-शाहंशाहों के लिये ही उसमें स्थान नहीं था; दीन-दुःखियों के लिये भी उसमें काफ़ी जगह थी। केवल उच्च और पवित्र, उन्नत और सच्चरित्र के लिये ही उसका हृदय खुला हुआ नहीं था; नीच और मलिन, पतित और दुश्चरित्र के लिये भी वह बन्द नहीं था। केवल रमणीय और मनोमुग्धकर, माननीय और यशस्कर के लिये ही उसका हृदय-द्वार उन्मुक्त नहीं होता था; कुत्सित और वीभत्स, हेय और जघन्य के लिये भी अवारित रहता था। सारांश, उसका सहानुभूति-क्षेत्र विस्तृत और संसार-व्यापी था। उसकी दृष्टि, अव्यवहित वर्तमान तक ही सीमित नहीं थी; वह सुदूर भूत और अस्पष्ट भविष्यत् में भी समान रूप से प्रवेश करने की शक्ति रखती थी। ये ही कारण हैं कि उसकी रचनाओं में व्यापकत्व और स्थायित्व हैं, जो काल और अवस्था के बन्धनों को भेदकर उन्हें चिरन्तन लोक-प्रियता और अमरता प्रदान करते हैं। उनमें एक

ऐसी सत्यता है, जिसे समय नष्ट नहीं कर सकता, परिस्थिति अनुपयुक्त और अवस्था-भेद अरुचिकर नहीं बना सकता। उसे रूढ़ियों और सामयिक रीति-रिवाजों को भेदकर तदानीं प्रचलित व्यवहारों, देश-देश के विभिन्न आचार-विचारों के अन्दर प्रवेश कर मानव-जीवन के वास्तविक सत्यों, मानव-हृदय के चिरस्थायी तत्वों तक पहुँचने की विलक्षण शक्ति थी। इसीसे उसकी रचनाएँ सर्वत्र आदरणीय हैं, इसीसे वे लोक-प्रिय हुई हैं और सब काल और देश में समान लोक-प्रिय रहेंगी। विषय के विस्तार में भी वे भिन्न रुचि और भिन्न व्यवसाय के लोगों के लिये मनोरञ्जन; बल्कि परिशीलन के लिये सामग्री रखती हैं। बाल की खाल खींचनेवाले वकील, शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं का निदान करनेवाले वैद्य, हकीम, डाक्टर, राजनीति-कुशल शासक, मंत्रणा-पटु मंत्री, रण-संचालन-निपुण सेनापति, न्यायकी गुरुता से गम्भीर विचारपति, वाक-चातुरी में प्रवीण वक्ता, धर्म के नाम पर मर मिटनेवाले पुजेरी और पादरी और आँख के अंधे गाँठ के पूरे रईस, सूद-खोर महाजन, हँसोड़, मजाकिये, अदालत के पियादे, पुलिस के चौकीदार आदि तथा विलास-प्रिय रमणी, सती-पवित्रता नारी, प्रेम-विह्वल-कुमारिका, कर्त्तव्य-

प्रौढ़ा, राज्य-सुखाभिलाषिणी राक्षसी-हृदय नारी-वेषी स्त्री इत्यादि सबके लिये शेक्सपियर कुछ-न-कुछ दिलबस्तगी और लाभ का सामान रखता है। ऐसे अ-साधारण प्रतिभावान सहृदय कवि और चतुर शिल्पी के सम्बन्ध में कुछ जानने की किस को इच्छा न होगी! जो लोग अंग्रेजी जानते हैं, उनके लिये तो शेक्सपियर का परिचय प्राप्त करना आसान है। वे तो उसके मूल-ग्रन्थों को भी पढ़ सकते हैं और उसके सम्बन्ध की असंख्य पुस्तकों का भी पारायण कर सकते हैं; पर जो केवल हिन्दी जानते हैं, अथवा जिनका अंग्रेजी का ज्ञान इतना अधिक नहीं है कि शेक्सपियर-साहित्य में उनकी गति हो सके, उनके लिये आवश्यक है कि शेक्सपियर के सम्बन्ध में कोई पुस्तक हिन्दी में लिखी जाय। हर्ष की बात है की स्नेहास्पद श्रीयुत सूर्यनारायणसिंहजी ने ऐसी एक पुस्तक लिखकर तैयार की है। आपमें इस विषय पर लिखने की योग्यता है। आपने इस पुस्तक में शेक्सपियर-सम्बन्धी महत्व-पूर्ण घटनाओं का उल्लेख कर उसकी मुख्य रचनाओं की आलोचना की है। जिस विषय पर हजारों पुस्तकें लिखी जा चुकीं, फिर भी उन्हें अधूरी समझ बड़े-बड़े विद्वान् नयी पुस्तकों की रचना आवश्यक नहीं समझते, उस पर एक छोटी-सी पुस्तिका पूरा

प्रकाश नहीं डाल सकती, यह तो स्पष्ट है; पर जिन्हें शेक्सपियर से कोई परिचय नहीं और न आगे होने की सम्भावना है, अथवा जो उसके सम्बन्ध में आरम्भिक ज्ञान चाहते हैं, उनके लिये श्रीयुत सूर्यनारायणजी की यह पुस्तिका अवश्य उपयोगी होगी। आशा है, समय पाकर वे इस सम्बन्ध में एक वृहत् पुस्तक लिखकर हिन्दी-संसार की शेक्सपियर-जिज्ञासा तृप्त करेंगे। तब तक के लिये मैं आशा करता हूँ, यह पुस्तिका हिन्दी-जगत् को रुचिकर होगी और अपनी सफलता से लेखक का उत्साह-वर्द्धन करेगी। इतिशुभम्।

सौर कार्तिक १७ सं० १९८५ } बदरीनाथ वर्मा

शेक्सपियर

जीता तूने चित्रकार का अद्भुत कौशल,
मानव प्रकृति महान किया है चित्रित अविकल,
स्वयं विश्व की झलक देख पड़ती तव स्वर में,
कहाँ, कौनसी वस्तु ? नहीं जो तेरे उर में।
चकराता उस काल को तेरा उज्ज्वल अमर यश।
जिसका कर्म यही सदा करना नष्ट जगत सुयश॥

—लेखक

× × × ×

"Thou art a monument without a tomb,
And art alive still, while thy book doth live."

"Ben Jonson"

शेक्सपियर संसार के सर्व-श्रेष्ठ कवियों में एक गिना जाता है। उसकी कविता ने उसे अमर और सर्व-प्रिय बना दिया है। लगभग तीन सौ वर्ष उसको मरे हो गये; पर उसका स्थान, ज्यों-का-त्यों, छोटे-बड़े—सभी साहित्यिकों के हृदय में बना है, यही नहीं, दिन-प्रति-दिन, उसके काव्य का अनोखापन हमारे सामने आता जाता है। जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास के कविता-सागर में जितनी डुबकियाँ लगाई जायँ उतने ही अनोखे रत्न निकलें, उसी प्रकार शेक्सपियर के काव्य के सारे गुण एक बार ही हमारे सामने नहीं आ सकते। ज्यों-ज्यों हम उसे ढूँढ़ने के लिये दत्तचित्त होंगे, त्यों-त्यों हम उसकी अपूर्वता से अभिज्ञता प्राप्त करते जायेंगे। अतः दोनों प्रकार के पाठक, बड़े-से-बड़े और छोटे-से-छोटे के लिये उसके काव्य में सामान भरा पड़ा है। दोनों ही अनुपम आनन्द लाभ कर सकते हैं।

एक बड़े आलोचक की राय से संसार का प्रत्येक व्यक्ति कवि है। पर सबसे बड़ा कवि वही है, जो केवल अपने ही समय का और अपनी ही जाति का नहीं; वरन् सभी समयों के लिये और सभी जातियों का कवि है। हम बिना किसी संदेह के शेक्सपियर को सर्वकालीन और सर्वदेशीय कवि कह सकते हैं। वह यथार्थ में विश्व-

कवि है। उसने मानव-प्रकृति का सर्वाङ्गीण वर्णन किया है। प्रकृति में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसका चरित्र-चित्रण हमें उसके ग्रन्थों में न मिलता हो। डाक्टर जॉनसन ने बहुत उपयुक्त कहा है कि शेक्सपियर ने बहुरंगे मानव-जीवन के प्रत्येक परिवर्तन का वर्णन किया है। इतना ही नहीं उसके ग्रन्थों में ऐसे जीवन का ख़ाका भी मिलता है, जिसका जोड़ा संसार में मिलना मुश्किल है। कारण यह है कि उसकी रचना अद्भुत और नवीनता लिये होती है; अतः उसके संसार के सम्मुख, हमारा संसार उपहासास्पद और निर्धन है। यह उसकी अनोखी कल्पना का फल है। वह इतनी दूर क़ी कल्पना करता है कि समय उसके पीछे-पीछे हाँफता हुआ दौड़ता है। वास्तव में, उसकी कविता का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। एक बड़े समालोचक ने तो उसे स्वयं प्रकृति से ही उपमा देकर उसकी महानता प्रमाणित की है।

महाकवि के समान शेक्सपियर की कविता में भी सभी रसों का वर्णन है। जितने भावों का वर्णन शेक्सपियर ने किया है, उनसे अधिक वर्णन करना मानव-शक्ति के बाहर की बात है। इतनी उच्च-कोटि के कवि की जीवनी जानने की इच्छा लोगों को हुआ ही करती है। किसकी इच्छा नहीं होगी कि सूर और तुलसी की जीवनी

और जीवन-सम्बन्धी घटनाओं से अभिज्ञता प्राप्त करें। यह स्वाभाविक है; पर जिस प्रकार गोस्वामीजी की जीवनी की ओर; और उनकी उज्ज्वल कीर्ति की ओर एक-साथ दृष्टि डालने से आश्चर्य होता है। उसी प्रकार शेक्सपियर की कीर्ति भी हमें आश्चर्यित किये देती है। क्या यह कम अचम्भे की बात है कि एक ग्रामीण तुच्छ और निर्धन बालक ने, जिसने पूरी शिक्षा भी नहीं पाई, लंडन जाकर रंगशालाओं में प्रवेश पा अन्य नाटककारों की सहायता से इतना उन्नति की, कि अब उसे विश्व-कवि कहने में भी संकोच नहीं होता; अतः शेक्स-पियर की जीवनी पढ़ने के लिये हमें बड़ी उत्सुकता होती है।

कवि का जीवन-चरित यद्यपि उसके वंश, जन्म, मरण और कार्यक्षेत्र का वर्णन-मात्र ही नहीं है, तथापि इन बातों से उसकी कविता पर बड़ी झलक पड़ती है। उक्त बातें कवि के साधारण जीवन से सम्बन्ध रखती हैं; पर उस का विशेष जीवन साधारण जीवन से भिन्न होता है। कवि का काव्य ही उसका विशेष या यथार्थ जीवन है; अतः कवि के साधारण जीवन के अतिरिक्त हमें इसका भी पूरा ध्यान रहे कि, उसके हृदय का किस प्रकार विकास हुआ है, किस प्रकार के वातावरण में

उसने अपना कवि-जीवन बिताया; और उसकी कविता पर उसके चतुर्दिक् वातावरण का क्या प्रभाव पड़ा आदि। प्रस्तुत पुस्तक में शेक्सपियर की साधारण जीवनी के साथ-साथ उसकी कविता पर कुछ झलक डालते हुए उसके विशेष जीवन की भी व्याख्या की जायगी।

एक तो किसी भी प्राचीन कवि की जीवनी लिखना बहुत कठिन काम है, दूसरे शेक्सपियर के जीवन-सम्बन्धी बातों का विवरण हमें बहुत कम मिलता है। उसके सम्बन्ध में न तो उसके समकालीन कोई लेख मिलते और न उसका निजका पत्र-व्यवहार ही पाया जाता है। दूसरे कवियों ने रचना करते हुए अपने जीवन के सम्बन्ध में संकेत किया है; पर शेक्सपियर को इसकी कुछ परवाह ही नहीं थी। अपने साधारण जीवन के विषय में उसने कहीं कुछ नहीं लिखा। हाँ, अपने अमर यश के सम्बन्ध में उसने एक स्थान में कहा है—

Not marble nor the gilded monuments
Of princes shall out live tho powerful rhyme.

अर्थात्—बड़े-बड़े राजकुमारों के पाषाणीय और स्वर्णीय स्मारक इस काव्य से अधिक जीवित नहीं रह सकते। शेक्सपियर का जीवन-वृत्तान्त दुष्प्राप्य होने पर भी लोगों ने खोज-पड़ताल कर उसके जीवन-चरित्र

को एक विस्तृत रूप दे दिया है। कहा गया है कि किसी कवि का वास्तविक जीवन उसकी कविता ही है। शेक्सपियर के महान् जीवन के लिये भी उसके ग्रन्थों में सामग्री भरी पड़ी है; अतएव यहां शेक्सपियर की जीवनी के साथ-साथ उसके काव्यों की संक्षिप्त समालोचना की जायगी।

माता-पिता और जन्म

हमारे कवि शेक्सपियर का पूरा नाम विलियम शेक्सपियर था। विलियम शेक्सपियर का पितामह रीचार्ड शेक्सपियर था। रीचार्ड इंगलैंड के वारविक (Warwick) ज़िले के स्नीटरफील्ड नामक ग्राम का कृषक था। इसके विषय में अधिक बातें ज्ञात नहीं हैं। रीचार्ड का पुत्र जॉन लगभग १५८७ ई० में स्नीटरफील्ड से निकट ही के एक दूसरे ग्राम स्ट्रेटफोर्ड औन अवन में चला आया। यही जॉन विलियम शेक्सपियर का पिता था। स्ट्रेटफोर्ड में आकर जॉन अन्न और दूसरी कितनी चीजों का व्यापार करने लगा। काम-काज में उसे बड़ी सूझ थी। सुस्ती उसमें तनिक भी न थी; इसीलिये एकाएक उसकी बड़ी तरक्की हुई। १५५७ ई० में उसका विवाह विलमकोट ग्राम के एक किसान की लड़की मेरी ओर्डेन से हुई।

यही मेरी विलियम की पूज्य माता थी। व्यापार में सफलीभूत होने के कारण वह अपने नगर का बहुत बड़ा आदमी हो गया था। उसने कुछ सम्पत्ति भी हासिल कर ली थी। धीरे-धीरे वह नगर की म्युनिसपैलिटी के छोटे-छोटे ओहदे से बड़े-बड़े स्थान पर पहुँच गया। जिस समय विलियम ४ ही वर्ष का था, उसी समय वह "पीस जस्टिस" (Justice of the peace) और High Baillif हो चुका था। वह साहसी, आशावादी और चंचल प्रकृति का पुरुष था। उसे नाटक आदि देखने की बड़ी इच्छा रहती थी। वह हठी और बोल-क्कड़ भी था। पीछे उसके व्यापार के गिर जाने से उसकी आर्थिक दशा खराब हो गई, पर १६०१ तक—जब वह मरा—विलियम के कारण उसकी दशा पुनः सुधर गई। शेक्सपियर ने अपने ग्रन्थों में बूढ़े पिता का जो चित्र खींचा है, वह उसी की स्मृति समझ पड़ती है।

शेक्सपियर की माता 'मेरी' एक बड़े घराने की लड़की थी। उसमें उच्चकुल के गुण भी भरे पड़े थे। 'मेरी' का प्रभाव शेक्सपियर पर बहुत पड़ा। बड़े घराने की स्त्रियों के रीति-रस्म, चाल-ढाल के सम्बन्ध में शेक्सपियर को जैसी शिक्षा अपनी माता के आचरण से मिली, वह उसे पढ़ने-सुनने से कभी नहीं मिल सकती।

इन्हीं 'जॉन' और 'मेरी' के घर में हमारे शेक्सपियर का जन्म २३ अप्रेल १५६४ ई० को स्ट्रेटफोर्ड नगर में हुआ।

विद्यालय और शिक्षा

शेक्सपियर की विशाल योग्यता और उत्तम भाषा देखकर लोगों को सन्देह होता है कि उसे अवश्य स्कूलों में काफी शिक्षा मिली होगी ; पर यथार्थ में शेक्सपियर का शिक्षालय, न तो साधारण मनुष्यों की भाँति मनुष्य का कायम किया हुआ स्कूल ही था ; और न उसे स्कूल-सम्बन्धी शिक्षा ही पूरी मिली थी। उसके माता-पिता भी अनपढ़ ही थे ; पर वह स्ट्रेटफोर्ड के ग्रामर स्कूल में जहां लैटिन ग्रीक भाषाओं की पढ़ाई होती थी लड़कपन में कुछ वर्षों तक पढ़ने के लिये भेजा गया। १६ वर्ष की उम्र तक वह वहाँ पढ़ता रहा। इस व्याकरण-शाला के (ग्रामर-स्कूल) के सिवा उसने और किसी स्कूल में नहीं पढ़ा। यहाँ भी उसने मातृभाषा अंग्रेजी के अतिरिक्त काम-काज के योग्य कुछ लेटिन और ग्रीक सीख ली थी। भाषा से अभिज्ञता प्राप्त करने के ख्याल से वह लैटिन और ग्रीक नहीं पढ़ता था। उसकी इच्छा केवल उनमें भरी हुई बहुमूल्य चीजों को जानने की थी। पता नहीं है कि उसने कोई परीक्षा पास की थी या नहीं ; पर

उसके लेखों से यह अवश्य मालूम होता है कि उसकी बुद्धि विलक्षण थी।

शेक्सपियर अभी पढ़ ही रहा था कि उसके पिता को दरिद्रता ने आ घेरा। उसका पिता धन-हीन हो गया। उसकी जमीन गिरवीं पड़ गयी और थोड़े ही दिनों में ऐसी दशा हो गयी कि शेक्सपियर को स्कूल छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़कर उसने कौन काम करना प्रारम्भ किया यह पीछे कहा जायगा। यहाँ यह कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि शेक्सपियर का शिक्षा प्राप्त करने का ढंग कैसा था। कहा जाता है कि जिस प्रकार भूखे मनुष्य की इच्छा होती है कि कितना क्या मिले और खा डालूँ; उसी प्रकार शेक्सपियर असंतोषी पाठक था। उसके सामने संसार खुला पड़ा था। सभी चीजें उसे सीखनी थीं; जीवन के थोड़े समय में सभी वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करना वह असम्भव समझता था; अतः उसे श्रमसाध्य और दीर्घकालीन अध्ययन पसन्द न था। उसने अध्ययन के श्रमपूर्ण ढंग के लिए घृणा भी प्रगट की है। उसने कहा है:—

"Study is like the heaven's glorious sun,
That will not be deep-searched with sancy looks;
Small have continual plodders ever won
Save base authority from others books."

अर्थात्—अध्ययन आकाश के चमकते हुए सूर्य के समान है। कोई मनुष्य अपनी ढीठ आँखों से उसके भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। जो मनुष्य दूसरे के गुणों का दीर्घकालीन और सश्रम अध्ययन करता है, वह इसके अतिरिक्त कि वह अपने भावों के लिये अपने ग्रन्थकारों का प्रमाण दे सके, कुछ नहीं प्राप्त कर सकता (अर्थात् उनके भावों की पुनरावृत्ति कर सकता है, कुछ नया निकाल नहीं सकता)।

शेक्सपियर बहुत शीघ्र पढ़नेवाला व्यक्ति था। थोड़े ही समय में बड़ी-से-बड़ी पुस्तक वह इधर-से-उधर उलट जाता था और उसका सारांश बहुत दिन तक स्मरण रखता था। जिस काल में शेक्सपियर का प्रादुर्भाव हुआ था उस समय पुस्तकों और पत्रों की भरमार हो चली थी, पर उस समय की कोई भी पुस्तक शायद ही ऐसी होगी, जिसे उसने एक बार न पढ़ा हो। कहा जाता है कि वह एक ही बार में किसी भी पुस्तक का सार हृदयंगम कर लेता था।

शेक्सपियर के विषय में कुछ समालोचकों का विचार है कि जितना ज्ञान शेक्सपियर ने प्राप्त किया, उसका कारण उसकी प्रतिभा, उसकी सहज ईश्वर-दत्त आन्तरिक्त शक्ति (Genius) था। उसकी कल्पना-शक्ति

विशाल और बुद्धि विलक्षण थी। कुछ और लोगों का विचार है कि जो कुछ उसे प्राप्त हुआ उसका मूल कारण उसके चतुर्दिक् वर्तमान अवस्थावली और परिस्थिति ही (Circumstances and environments) था। दोनों प्रकार के विचारों में तथ्य मालूम होता है। असल बात यह है कि उसे कुछ स्वाभाविक विलक्षण शक्ति भी थी और उसके चारों ओर जो वायुमण्डल था वह भी उसके बड़े होने में सहायता पहुँचानेवाला था।

शेक्सपियर के विषय में कहा जा सकता है कि उसकी यथार्थ शिक्षिका स्वयं प्रकृति और यह प्राकृतिक संसार ही उसका शिक्षालय था। किस प्रकार उसने अपनी ईक्षण-शक्ति से काम किया, यह उसके स्ट्रेटफोर्ड और लण्डन के जीवन से विदित हो सकता है।

स्ट्रेटफोर्ड और लण्डन

स्ट्रेटफोर्ड एवान नदी के किनारे एक छोटा; पर बहुत रमणीय ग्राम था। उसके पास ही में आर्डेन नामक जंगल, वारविक और केलिनवर्थ का पुराना किला, रोमनों के कैम्प और फ़ौजी सड़क आदि थे। चारों ओर के स्त्री-पुरुष के निरीक्षण से तो शेक्सपियर को शिक्षा मिलती ही थी, स्ट्रेटफोर्ड के उक्त आकर्षक

दृश्य से उसके ग्रहणशील हृदय पर बहुत प्रभाव पड़ता था। उसकी कल्पना-शक्ति को उत्तेजना मिलती थी। व्याकरण-शाला में जिस समय वह पढ़ता था, उस समय उसने स्कूल में खेले जानेवाले सभी खेलों से जानकारी प्राप्त कर ली थी और उन्हीं खेलों का वर्णन हम उसके ग्रन्थों में जहाँ-तहाँ पाते हैं। कभी-कभी वह दिन-रात गाँव में फिरा करता था और पतझड़ से लेकर वसन्त तक, सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक; तथा हवा से लेकर बादल तक सभी प्राकृतिक दृश्यों का निरीक्षण ध्यान से किया करता था। वह गाँव के स्वाभाविक दृश्यों को इतने गौर से देखता था कि उनका चित्र उसके हृदय-पट पर सदा के लिये अंकित हो जाता था। एक स्थान पर वह लिखता है—

I saw a smith stand with his hammer, thus,
The whilst his iron did on the arvil cool.
With open morth swallowing a tailor's news;
Who with his shears and measure in his hand,
Standing on slippers, which his nimble haste
Had falsely thrust upon contrary feet,
Told of a many thousand warlike French
That were embattailed and ranked in kent.

इन पंक्तियों से विदित होता है कि शेक्सपियर छोटी-छोटी बातों का भी सहानुभूति-पूर्ण और गहरा

निरीक्षण करता था। एक लोहार अपने हाथ में हथौड़ा लिये, उस तप्त लोहे को, जो निहाई पर ठण्ढा हो रहा है, पीटनेके लिये खड़ा है, पर जब तक लोहा पीटने लायक होता है, तब तक वह मुँह बाकर कैसे एक दरजी से— जो अपने हाथ में फीता आदि लिये हुए है और जिसने हड़बड़ी में एक पाँव की जूती दूसरे में पहन ली है,— कुछ फ्रान्सीसी योद्धाओं की ख़बर सुन रहा है, इसका प्रत्यक्ष चित्र उपर्युक्त पंक्तियों में देख पड़ता है।

किसी बड़े कवि के लिये प्रकृति, वस्तुओं का समूह-मात्र ही नहीं है, वरन् उसके हृदय की रंग-भूमि में आत्मा का जो नाटक खेला जाता है उसी का प्रभाव, प्रतिबिम्ब या दूसरा भाग है। यह शेक्सपियर के हृदय में बहता हुआ प्रेम का सच्चा ही प्रभाव था जिसका प्रतिरूप हम उसके इस वाक्य में पाते हैं—

The current that with gentle murmur glides,
Thou knowest being stop'd, inpatiently doth rage;
But when his fair course is not hindered,
He makes sweet music th' enamel'd stones,
Giving a gentle kiss to every sadge
He over taketh in his piligrimage.

अर्थात्—वह धारा जो कलकल शब्द करती हुई बहती रहती है, जब रोक दी जाती है, तो रोषकर अधी-

रता से अग्रसर होने का प्रयत्न करती है; पर यदि उसकी मधुर-मन्द गति में किसी प्रकार बाधा न पहुँचाई जाय, तो वह पत्थरों का आलिंगन कर, और रास्ते में मिलनेवाले प्रत्येक समीर को चुम्बन कर मानों मधुर-संगीत सुनायेगी।

कहा जा चुका है कि ज्यों ही जॉन शेक्सपियर की आर्थिक अवस्था अधिक खराब हो गई कि उसने शेक्स-पियर को पढ़ने से छुड़ाकर अपने व्यापार की सहायता के लिये बुला लिया। उस समय शेक्सपियर की अवस्था १४ वर्ष की थी। यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि स्कूल छोड़कर उसने कौनसा काम करना प्रारम्भ किया। किसी-किसी का कहना है कि वह कुछ दिनों तक, तो एक ग्रामीण स्कूल में शिक्षक का काम करता रहा और पीछे एक वकील के यहाँ किरानी बनकर रहा। जो कुछ हो, शेक्सपियर ने अपने कामों से पिता की दशा बहुत-कुछ सुधार दी। उसका पिता भेंड़ पालता और ऊन का व्यापार करता था। इस काम में भी शेक्सपियर अपने पिता की सहायता किया करता था। इस बात में वह महाकवि कालिदास के समान था; क्योंकि कुछ का कहना है कि कालिदास भी लड़कपन में गड़रिये का काम किया करते थे।

ऊपर की बातों से मालूम होगा कि शेक्सपियर स्कूल छोड़ने के बाद कहीं दूसरे स्थान में नहीं गया। शेक्सपियर का समय विकास का समय था। उस समय लोग अपने-अपने पुत्रों को युद्ध की शिक्षा-प्राप्त करने के लिये या संसार के अन्य स्थानों की खोज करने के लिये बाहर भेजा करते थे। शेक्सपियर के पिता का इस प्रकार का कोई विशेष झुकाव न था; किन्तु कुछ झुकाव रहने पर भी शेक्सपियर उसके विरुद्ध घर ही पर रहना चाहता था; परन्तु घर पर वह, शान्त होकर बैठ नहीं सकता था। उसकी इन्द्रिय-जन्य वासनाएँ असमय में ही प्रौढ़ हो गई थीं। वह उन्नीस वर्ष का भी नहीं होने पाया था कि उसने १५८२ में एक धनिक घर की ऐन हैथवे नाम की एक लड़की से विवाह कर लिया। हैथवे अपने पति से आठ वर्ष बड़ी थी। मालूम नहीं कि हैथवे अधिक सुन्दरी थी या किसी दूसरे कारण से शेक्सपियर ने अपने से बड़ी स्त्री से विवाह करना पसन्द किया। जो हो, शेक्सपियर के सम्बन्ध से हैथवे भी अमर हो गई है। छः महीने के बाद ही हैथवे को एक संतान हुई और १८८५ में पुनः दो यमक सन्तान की उत्पत्ति हुई।

शेक्सपियर का वैवाहिक जीवन आनन्द-प्रद नहीं

मालूम होता । ज्ञात होता है, उसने प्रेम के आवेश में औचित्य की ओर ध्यान नहीं दिया। उसने स्वयं १० और २३ वर्ष के बीच की उम्र से असन्तोष प्रगट किया है। उसका एक पात्र कहता है—"क्या ही अच्छा होता यदि मनुष्य-जीवन के १० और २३ वर्ष के बीच की उम्र की स्थिति ही नहीं रहती ; क्योंकि इस समय में भोग-विलास, सन्तानोत्पत्ति और लड़ाई-झगड़े के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।"

सर टामस लूसी से अनबन हो जाने के कारण और अपने पिता की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब हो जाने के कारण शेक्सपियर को १८८६ ई० में लण्डन की राह पकड़नी पड़ी। लण्डन में उस समय उसकी जान-पहचान का कोई आदमी न था। कोई कार्य उसे मिलता तो कैसे ? उसे नाटक से पहले ही से कुछ-कुछ प्रेम था। अतः वह एक नाट्यशाला में गया ; परन्तु वहाँ उसे बहुत छोटा काम मिला । लोग कहते हैं पहले-पहल वह नाट्य-शाला में आये हुए बड़े लोगों का घोड़ा पकड़कर निर्वाह करता था। निस्सन्देह उसे आरम्भ में बड़ा कष्ट उठाना पड़ा और लाज सहनी पड़ी ; पर थोड़े ही समय में वह उच्च पद को प्राप्त हो गया।

शेक्सपियर कवि या नाटककार तो था ही ; पर साथ

ही वह नट भी था ; बरन् पहले वह नट था और पीछे नाटककार। नाट्य से सचमुच उसे बड़ा प्रेम था। जिसने बीस वर्ष तक नाटक खेला और लिखा, भला उसे नाट्य से प्रेम क्योंकर न रहा होगा? यदि उसे नाट्य प्रिय न लगता और वह नट का काम भी न करने पाता, तो यह कदापि सम्भव नहीं था कि वह एक भी ग्रन्थ उस प्रकार का बना सकता, जैसा वह नट और नाट्य-प्रिय बनकर बना सका।

अस्तु, लण्डन पहुँचने के थोड़े ही दिन बाद शेक्स-पियर नाट्य-शालाओं में पात्र बनने लगा। नट का काम करते-करते वह नाटक के सभी नियमों से अभिज्ञ-सा हो गया। हैमलेट ने जिस नाट्य-विद्या-निधानता के साथ नये नाटक खेलनेवालों को शिक्षा दी है, वह शेक्सपियर की अपनी ही विद्वत्ता समझनी चाहिये।

नाट्य-शालाओं के बाहर शेक्सपियर पेमब्रोक मौन्टगोमरी और साउदम्पटन जैसे शौक़ीन और नये-नये युवकों के साथ रहा करता था। अपने साथियों के आचरण का शेक्सपियर के ऊपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। कल्पना-शक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण हो गई। नये-नये भावों का अनुभव होने लगा। कवि-जीवन के समान उसका जीवन भी प्रेमानन्द-मय हो गया। इसी

समय के तरंगित हृदय से उसने 'विनस और एडोनीस' काव्य की रचना की। यह प्रेम-विषयक कविता अपूर्व निकली। इससे शेक्सपियर का नाम खूब निकला। बड़े-बड़े लोगों से जान-पहचान होने लगी। इस प्रकार उसे बड़े-बड़े आचरणों का अध्ययन करने का भी सुन्दर अवसर मिला।

लण्डन के शौक़ीन मिज़ाज लोगों के साथ रहते-रहते शेक्सपियर का हृदय भी प्रेम-परिप्लावित होने लगा। यद्यपि उसका वैवाहिक जीवन आनन्द-कर नहीं कहा जा सकता, तथापि वह एक अपूर्व नायक था। उसका प्रेम ऊँचे दरजे का कहा जा सकता है। उसके प्रेम के सम्बन्ध में आगे के किसी परिच्छेद में चर्चा की जायगी।

नाट्य-शालाओं में रहते-रहते उसके हृदय पर कितना प्रभाव पड़ा और वह कैसे एक साधारण नट से प्रसिद्ध नाटककार हो गया, इसको अच्छी तरह समझने के लिये हमें उस समय के लण्डन नगर और वहाँ की नाटक-संस्थाओं के विषय में भी कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है।

शेक्सपियर के काल में लण्डन एक छोटा-सा शहर था। टेम्स नदी के आस-पास ही लोग बसे हुए थे।

नगर के चारों ओर दीवार खड़ी कर दी गई थी। लोग दीवार के बाहर जाकर खेल-तमाशा आदि किया करते थे, या, नदी पर जाकर साउथ वर्क में देहाती खेल खेला करते थे। स-शस्त्र खेल ईंट की दीवार से घिरे हुए स्थानों में होता था। उस समय नगर के बाहर दो नाटक-शालाएं भी थीं। नाट्य-शालाओं के प्रबन्धकों को नाटक खेलने के लिये किसी-प्रसिद्ध जमींदार या बड़े आदमी की संरक्षकता प्राप्त करनी पड़ती थी ; क्योंकि १५७१ ई० में राज-सभा (पार्लियामेंट) ने यह नियम पास किया था, कि जो कोई बिना लाइसेन्स के नाटक करेगा, वह दण्ड का भागी होगा और यह लाइसेन्स साधारणतः बड़े आदमियों को ही मिलता था, जो अपने लिये नाटक-मण्डली रखने की आज्ञा आसानी से पा सकते थे। इस प्रकार की, लगभग आठ नाटक-सभाएँ उस समय मौजूद थीं। शेक्सपियर इन्हीं में से किसी-न-किसी कम्पनी में नाट्य किया करता था। उक्त आठ कम्पनियों में 'दी थियेटर' और 'दी कर्टेन' नाम की कम्पनियाँ प्रसिद्ध थीं। पीछे 'दी रोज़' नाम की कम्पनी भी कायम हुई। इन्हीं कम्पनियों में अधिकतर शेक्सपियर नट बना करता था।

ऊपर जिस प्रकार के लण्डन का वर्णन है, उसी में

शेक्सपियर ने पहले-पहल अपना नाटकीय जीवन आरम्भ किया था। उसके लण्डन-जीवन का प्रारम्भिक समय बहुत ही नवीनता और उत्तेजना पूर्ण रहा होगा। अपनी चौकस निगाह से शेक्सपियर ने जितना लाभ इस समय उठाया, उतना कभी नहीं उठाया होगा। उसका कवि-नेत्र सदा खुला रहता था। वह सदा अपना धन्धा सीखने में दत्त-चित रहा करता था। इसी समय उसने नागरिक जीवन से काफ़ी परिचय प्राप्त कर लिया। प्रत्येक कलावान मनुष्य के जीवन में एक समय आता है, जिस समय उसके जीवन का विकास धड़ल्ले के साथ होता है। शेक्सपियर के जीवन का यह समय, उसी प्रकार का था। इसी समय में उसके हृदय के सामने संसार का प्रतिरूप अधिकांश खिच गया था। प्रत्येक नया सद्भाव उसके हृदय-क्षेत्र में अपना अटल अड्डा कायम करने और उसके हृदय-क्षेत्र को विश्व-क्षेत्र में परिवर्तित करने लग गया था।

शेक्सपियर ने अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर ऐसी ऐसी बातों का उल्लेख किया है, जिनका स्थान उसके स्मृति-क्षेत्र में हो गया था। हेनरी चतुर्थ में डकैती का वर्णन "बारहवीं-रात्रि" के 'दी एलीफेन्ट' नाम की सराय का वर्णन आदि उसकी देखी और अनुभव की हुई बात की स्मृति है।

जिस समय शेक्सपियर नट का काम कर रहा था उस समय नाट्य-शालाओं के प्रबन्धकों को, अच्छे-अच्छे नाटक खेलने के लिये नहीं मिलते थे ; अतः वे लोग पुराने-पुराने नाटकों को काट-छाँटकर खेलने-योग्य बनवा लेते थे। यह पुराने-पुराने नाटकों को सुधारने और देखने का काम धीरे-धीरे शेक्सपियर को भी मिला। पुराने नाटकों का संशोधन करते-करते उसे नाटक लिखने का अनुभव अच्छी तरह प्राप्त हो गया। नाटक लिखने का अनुभव प्राप्त हो जाने पर, वह स्वयं नाटक लिखने लगा। आनन्द की बात है कि उसके नाटक नाट्य-शालाओं में खेले जाने के लिये अधिक पसन्द किये जाने लगे। उसे रुपये भी अच्छे प्राप्त होने लगे। उन रुपयों से उसने दो-एक नाटक-कम्पनियों में हिस्सा खरीद लिया और उन्हीं में उसके अधिक नाटक खेले जाने लगे।

शेक्सपियर के समय में इसके समान कोई अच्छा लेखक न था। हां 'मारलो' का नाटक जरूर पसन्द किया जाता था ; पर उसके नाटक दुःखान्त ही हुआ करते थे उस विभाग में उसकी बराबरी करनेवाला कोई न था। एक प्रकार से नाट्य-शालाओं पर उसका साम्राज्य जमा हुआ था। सुखान्त नाटक की ओर लोगों का उतना झुकाव न था। लोगों में चाह हुई भी, तो उनकी आवश्यकता

के अनुसार नाटक बनानेवाला ही कोई न था। लोग नाटक में खेल-कूद देखना पसन्द करते थे। मज़ाकिये को तो वे दिल से चाहते थे। शेक्सपियर ने लिखना प्रारम्भ किया। वह बराबर पाठकों की इच्छा-पूर्ति का ध्यान रखता था। इसी कारण से उसके नाटक लोक-प्रिय बनते गये। उसने अपने ग्रन्थों में 'क्राउन' और 'जेस्टर' (विदूषक) को भी स्थान दिया है। पर उनकी ओर लोगों का अत्यधिक झुकाव होने के कारण स्थान-स्थान पर उसने लोगों की चित्त-वृत्ति के प्रति घृणा भी प्रकट की है।

अस्तु, थोड़े ही दिनों में शेक्सपियर एक साधारण आदमी से प्रसिद्ध नाटककार हो गया। उसे रुपये भी काफी मिलने लगे। वह धनी होने पर नाट्य-शालाओं का प्रबन्धक और संस्थापक भी बन गया था। जन्म-स्थान स्ट्रेट फोर्ड से उसका प्रेम घटा नहीं था। वह वर्ष में एक बार वहाँ अवश्य चला आता था ; अतः रुपये मिलने पर उसने स्ट्रेट फोर्ड में अच्छी सम्पत्ति खरीद ली। १५९७ में कुछ जमीन खरीदकर उसने 'न्यूप्लेस' नाम का एक मकान भी बनवाया। कहा जाता है कि वह मकान नगर के सभी अन्य मकानों से अच्छा था।

१५८६ में उसका इकलौता लड़का हैमनेट मर गया। 'राजा-जौन' के 'कौन्सटैन्स' के शोक और 'आर्थर' के

दयनीय भाग्य में हम इस घटना का असर देख सकते हैं। इस समय शेक्सपियर का चित्त कुछ खिन्न हो गया था ; अतः थोड़े ही दिन में वह लण्डन छोड़ स्ट्रेट फोर्ड लौट आया। नाटक लिखने का उसे इतना चाव और अभ्यास हो गया था कि वह वहाँ भी चुपचाप नहीं बैठ सकता था। प्रतिवर्ष दो-दो नाटक लिखे जाते थे और शेक्सपियर की श्री-वृद्धि होती जाती थी। कहा जाता है, वह पीछे हज़ार-हज़ार रुपया एक वर्ष में खर्च करने लग गया था। 'औथेलो' 'राजा-लियर' 'और मैकबेथ' आदि शेक्सपियर ने स्ट्रेट फोर्ड ही में लिखे थे।

अपने ग्रन्थों में शेक्सपियर स्कौटलैण्ड और इटली की ऐसी स्थानीय बातों का वर्णन करता है, जिससे मालूम होता है कि उसने अवश्य उन स्थानों में भ्रमण किया होगा। 'हैमलेट' में एल्सीनोर का वर्णन वह इस प्रकार करता है कि मानो उसने उस स्थान को जरूर देखा हो ; पर ऐसी बात नहीं है। वह कभी वहाँ गया ही नहीं। हाँ, अपनी कम्पनी के आदमियों के साथ इङ्गलैण्ड के और-और हिस्सों में वह अवश्य जाता था ; अतः यह शंका की जा सकती है कि उसने स्थान-स्थान पर विना देखे हुए स्थानों का विश्वास-पूर्ण वर्णन कैसे किया है ; पर शेक्सपियर के लिये यह बड़ी बात नहीं थी। उसके लिये

किसी बात का इशारा काफी था। फिर कोई यह पता नहीं लगा सकता था कि अमुक विषय का ज्ञान उसे दूसरों के द्वारा हुआ। वेनिस की सुख्याति के कारण प्रति-वर्ष सैकड़ों यात्री वहाँ जाया करते थे। शेक्सपियर ने शायद उनके मुँह से वहाँ की बातों से अभिज्ञता प्राप्त की होगी। वह बराबर लोगों से मिला करता था। लोग भी उसे देखकर भड़कते नहीं थे, वरन् उसके साथ रहना पसन्द करते थे। शेक्सपियर सभी से बातें करता और बातों में ही इतनी खबर जान लेता कि कोई पढ़कर भी इतनी खबर नहीं प्राप्त कर सकता था।

अपने जीवन के आखिरी तीन-चार वर्ष शेक्सपियर ने निश्चितरूप से स्ट्रेट फोर्ड हो में व्यतीत किये। १६०७ में उसकी बड़ी लड़की मर चुकी थी। १६१६ में उसकी दूसरी लड़की भी चल बसी और वह स्वयं भी अपनी जन्म-गाँठ के दिन ही उसी वर्ष २३ अप्रेल को आंग्ल-साहित्य-सिंहासन को, इस स्थूल शरीर से शून्य कर, स्वर्गवासी हो गया।

शेक्सपियर की जीवनी साधारणतः यहाँ समाप्त होती है; पर उसके ग्रन्थों के अध्ययन से उसके सम्बन्ध में जो कुछ बातें विदित होती हैं, उनमें-से मुख्य-मुख्य का वर्णन आगे के कुछ परिच्छेदों में किया जायगा।

शेक्सपियर और उसका प्रेमोन्माद

यद्यपि शेक्सपियर का जीवन अमिताचार से भरा नहीं था, तथापि प्रेम की प्रबल धारा उसे कुछ दूर तक बहा ले गई थी। उसका हृदय बहुत ही कोमल और प्रेम से लबालब भरा था। कहा जा चुका है कि वह ऐसे लोगों की संगति में रहता था, जो सदा सांसारिक वैभव और पार्थिव सुखों ही में लिप्त रहते थे। इसी कारण हम शेक्सपियर की रचना में भी सौन्दर्योपासना और विलास की तीव्र भावना पाते हैं। वह अनोखा नायक था। वह स्वयं अपने प्रेमोन्माद पर लज्जित था। उसके प्रेम का पागलपन उसी के वचनों में देखियेः—

"When my love swears that she is made of truth,
I do believe her, though I know she his.

उसकी प्रेमिका जब अपनी सच्चाई की शपथ खाती है, तो उसकी बात को झूठ समझते हुए भी प्रेम-वश उसे बरबस उस पर विश्वास करना पड़ता है। प्रेम-राज्य में अविश्वास करने का साहस कहाँ? वह कहता है—"जब मेरी प्रेमिका कहती है कि उसका प्रेम निश्छल है और वह सत्यवती है, तो मैं उसका विश्वास कर लेता हूँ, यद्यपि मैं जानता हूँ कि वह झूठ कह रही है।"

एक ही साथ वह अपनी नायिका के प्रेम का तिरस्कार और चाहना किस प्रकार करता है देखिये:—

'Those lips of thine.
That have profaned their scarlet ornaments,
And sealjd false bonds of love as oft as mine,
Robbed others 'beds' revenues of their rents.
Be it lawful I love thee, as thou lovest those,
Whom think eyes woo as mine importune thee.

अर्थात्—तुम्हारे जिन ओष्ठों ने अपने पवित्र लाल आभूषण को कलंकित किया है और मेरे साथ प्रत्येक बार प्रेम की झूठी प्रतिज्ञा की है और दूसरों को भी अपने वाजिब सुख-चैन के हक से वंचित किया है। क्या ही अच्छा होता कि यह उचित और कानून न समझा जाता कि मैं वास्तव में तुम्हें उसी प्रकार प्यार करता हूँ, जिस प्रकार तुम उन्हें, जिनकी खुशामद तुम्हारी आँखें उसी तरह करती हैं, जैसे मेरी आँखें तुम्हारी।

शेक्सपियर की प्रेम-भावना जब बहुत बढ़ गई, तो वह सम्पूर्ण विश्व में अपनी नायिका का ही सौन्दर्य देखने लगा। वह अपनी प्रेमिका को सम्बोधन कर कहता है।

The lily I condemned for thy hand,
And buds of marjoram had stolen thy hair,
The rose fearfully on thorns did stand,
One blushing shawe, another whete despair,

A third nor red nor white had stolen of both—
And to his robbery had annexed thy breath,
More flowers I noted, yet I none could see,
But sweet or colour it had stolen from thee.

अर्थात्—कमल को मैंने खूब ही दुतकारा; क्योंकि वह तुम्हारा हाथ ले भागा था। मारजोरम की कली को तुम्हारे घुँघराले बाल चुराने के कारण फटकारा और गुलाब के फूलों को क्या कहता? वह स्वयं डरकर काँटे पर खड़े थे। एक लजाकर लाल हो रहा था, तो दूसरा उदासी से फीका पड़ रहा था। और तीसरा न तो लाल ही था, न सफेद। उसने तुम्हारी लज्जा और उदासी की ही चोरी नहीं की थी, तुम्हारे सुगन्धित निःश्वास को भी ले भागा था। जितने फूलों को भी मैंने देखा, सभी चोर ही ठहरे। किसीने तुम्हारा रूप चुराया, तो किसी ने रंग, किसी ने माधुर्य हरण किया था, तो किसीने सुवासित निःश्वास।

वह अपनी प्रेमिका की प्रशंसा में कहता है:—

'O, in what sweets dost thou thy sins enclose,'

अर्थात्—अहा! तुम अपना पाप अपने माधुर्य्य और सौन्दर्य्य में कैसे छिपाये लेती हो।

वसन्त के सौंदर्य्य का कारण उसकी प्रेमिका ही है। प्रेमिका की छाया और सुगन्ध से वसन्त वैभव-शाली हुआ है। वह एक पुष्प को सम्बोधन करके कहता है।

"Sweet chief, whence did thou steal thy sweet that smalls.
If not from my loves breath?"

"प्रिय चोर, यह सुगन्ध जिससे तू सुवासित हो रहा है, अवश्य तूने मेरी प्रेमिका के निःश्वास से चुराई होगी। तुझे यह और कहाँ प्राप्त होती?" उसकी प्रेमिका के निःश्वास के अतिरिक्त उस चोर को कहीं सुगन्ध प्राप्त ही नहीं हो सकती है! कैसा पक्का विश्वास है!

एक महान् व्यक्ति का कथन है कि सबसे प्रबल प्रेम वही है, जिसका कार्य बाढ़ के पानी के समान होता है। ऐसा प्रेम हृदय के सभी विरोधी भाव और पूर्व विचार को डुबा देता है। उसकी धारा एक ओर को ही जोरों में प्रवाहित होती है। दूसरी ओर वह चित्त को झुकने नहीं देता। शेक्सपियर का प्रेम भी इसी रूप का कहा जा सकता है। उस क्षुद्र कुंजी के सौभाग्य पर भी, जिस पर उसकी प्रेमिका हाथ चलाती है, वह तरस खाता है। क्या यह ऐसे-वैसे प्रेम की बात है? सचमुच में एक समय था जब शेक्सपियर की आँख में अपनी प्रेमिका के रूप का चश्मा लगा था। उस रूप ने उसकी कविता को सरस और सुन्दर बना दिया है। शेक्सपियर के जिस

प्रकार के प्रेम का ऊपर वर्णन है उससे कोई यह न समझे कि उसे वासना और सच्चे प्रेम का प्रभेद ही नहीं मालूम था। पवित्र प्रेम और कुत्सित प्रेम (तृष्णा) में जैसा उसने अन्तर दिखलाया है, वह प्रेमोपासक पाठकों के पढ़ने-योग्य है। वह कहता है:—

Lo ve comforteth like sun shine after rain,
But lust's effect in tempest after sun,
Loves gentle spring doth always fresh remain,
Lust is winter come ere summer half be done,
Love surfeits not, lust like a glutton dies,
Love is all truth, last full of forged lies.

अर्थात्—"पवित्र प्रेम बदली के बाद के सूर्य की किरण के समान आनन्द-दायक होता है; पर विषय-वासना का प्रभाव तीक्ष्ण गर्मी के पश्चात् की प्रबल आँधी के समान है। प्रेम का मधुर निर्झर सदा-सर्वदा स्वच्छता से बहता रहता है। वासना तो आधा ग्रीष्म बिन बने ही जाड़े के आगम के समान है। प्रेम से मन कभी नहीं ऊबता; पर वासना पेटू के समान मरता है। प्रेम सत्य है; पर वासना बनावटी और झूठी है।"

ऊपर की पंक्तियों से शेक्सपियर का प्रेम-विवेक प्रकट होता है। ऐसे प्रेम-विवेकी पुरुष का इन्द्रिय-जन्य लिप्सा की पूर्ति के लिये प्रेम करना असम्भव प्रतीत

होता है। यथार्थ में शेक्सपियर सौंद्र्योपासक था। उसे सुन्दर वस्तु प्रिय लगती थी, और वह सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता था। वह विचारवान् जरूर था; पर प्रेम-राज्य में विचार से काम लेनेवाले कम ही पुरुष होते हैं।" Love is too young to see what Conscienee is अर्थात्—"प्रेम इतना अप्रौढ़ होता है कि उसे अंतरात्मा का विवेक कहाँ?"

शेक्सपियर की पाठ्य-पुस्तकें और उनका व्यवहार

शेक्सपियर ने जितनी पुस्तकें पढ़ीं, उन सबोंसे उसे दो प्रकार के लाभ पहुँचे। एक तो यह कि नाटक लिखने की मुख्य सामग्री मिली और दूसरा यह कि कविता करने का ढंग आ गया। कहा जा चुका है कि शेक्सपियर किस प्रकार का पाठक था और उसने कितनी पुस्तकें पढ़ी होंगी; पर ऐसी कुछ पुस्तकों के नाम गिनाये जा सकते हैं, जिन्हें उसने अच्छी तरह अध्ययन किया था और जिनका चिह्न हम अब भी उसके नाटकों में साफ-साफ़ देखते हैं। 'रैयहेल होलिनोड' का इतिहास 'प्लूटार्क' की जीवनियाँ, जिनका अनुवाद सर टामस नौर्थ ने किया था, और 'पेन्टर का आनन्द का

हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ० प्र०
११८५
पुस्तकालय
इलाहाबाद

गए जो इटली के बड़े-बड़े उपन्यासकारों के अच्छे-अच्छे उपन्यासों का संग्रह था, उसने पन्ने-पन्ने उलट-कर पढ़ा था। सभी प्रारम्भिक नाटकों की मूल कहानी उसने इटली के उपन्यासों से ली है। हौलिन्सडे के इति-हास से ऐतिहासिक नाटकों का सामान मिला। और इसी प्रकार प्लूटार्क से भी उसे बहुत सहायता मिली। पर देखने से मालूम होगा कि तीनों पुस्तकों से उसने एक समान काम नहीं लिया। मूल उपन्यासों से उसने बड़ी स्वतन्त्रता से काम लिया है। कहानी के रूप को मनमाना बदल दिया है। कहीं घटा दिया है, तो कहीं बढ़ा दिया है। या यों कहिये कि अपनी रुचि के अनुसार मूल-कहानी के दूषित और नापसन्द हिस्से को निकाल-कर, उसे अपनी कल्पना और अपने कौशल से सुन्दर रूप में ढाल दिया है।

हौलिन्सडे से जो कुछ उसने प्राप्त किया है, उसे उसने ज्यों-का-त्यों रक्खा है। कहीं-कहीं तो वह हौलिन्सडे का अनुवाद-मात्र करता गया है ; पर स्थान-स्थान पर और वहाँ पर, जहाँ उसकी कल्पना-शक्ति जग गई है, उसने नकल करना छोड़ दिया है और अपनी निज की शक्ति से काम लिया है। ऐसे-ऐसे स्थानों में ही शेक्स-पियर की अपनी शक्ति की पहचान होती है।

प्लूटार्क के पढ़ने से शेक्सपियर की केवल कल्पना-शक्ति ही नहीं उत्तेजित हुई, वरन् प्लूटार्क के कितने ही भाव और विचार बराबर उसके चित्त में अड्डा जमाये रहे।

शेक्सपियर के नाटकों में उक्त तीन पुस्तकों के अतिरिक्त एक इस प्रकार के साहित्य का भी प्रभाव पाया जाता है जिसको साहित्य के नाम से नहीं पुकारा जा सकता है। जहाँ-तहाँ हम उसके ग्रन्थों में पुराने-पुराने अनेकों गीत और कहावतें देखते हैं। यह विशेषता उसके किसी भी समकालीन नाटककार में नहीं देखते, जितनी उसमें। कहा जाता है कि उसके केवल प्रारम्भिक नाटकों से ही कहावतों की एक अच्छी पुस्तक संकलित हो सकती है। 'राजा लियर' 'बारहवीं रात्रि' और 'हैमलेट' आदि में जो गीत मजाकिये और ओफेलिया आदि के द्वारा गाया जाता है, वह केवल स्थान-पूर्ति के लिये ही नहीं गाया जाता, वरन् वह शेक्सपियर के नाटक का एक मुख्य अंग है और उसके नहीं रहने से नाटक का महत्त्व बहुत घट सकता है। ग्रामीण-साहित्य को शेक्सपियर खूब ध्यान से अध्ययन करता था। उसके अधिकांश गीत उसी ग्रामीण-साहित्य से लिये गये हैं। उस ग्रामीण पुराने गीत के महत्त्व का एक उदाहरण यहाँ पर दिया जाता है।

Come away, come away death,
And in sad cypress let me be laid ;
Fly away, fly away breath,
I am slani by a fair cruel main.

× × × ×

Not a flower, not a flower sweet,
On my black coffin let tnere be strewn,
Not a friend, not a friend great,
My poor corpse, where my bones shall be thrown,
A thousand thousand sighs to save, lay me o where
Sed true lover never finds my grave to weep there,

अर्थात्—'मृत्यु' तेरा स्वागत है। मेरे मरने के बाद मुझे उदास सनौवर (एक प्रकारका वृक्ष) की रथी पर रक्खो। प्राण मुझे परित्याग करो! एक कठोर सुन्दरता मुझे मारे डालती है।

× × × ×

"मेरे काले कफन पर एक भी सुगन्धित पुष्प न बितरो। कोई मेरा मित्र भी मेरे कब्र के पास जाकर मेरा स्वागत न करे! यदि मेरी हजारों असह्य आहों को बचाना हो, तो मेरी कब्र वहाँ बनाओ, जहाँ कोई भी सच्चा प्रेमी रोने को न जा सके।"

यह गीत "बारहवीं रात्रि" का है। ड्यूक औरसिनो, जिसके सुनने के लिये यह गाया गया है, कहता है—

"यह गीत यद्यपि भद्दा है, तथापि यह मुझे प्रिय लगता है; क्योंकि यह प्राचीन काल के भोले-भाले प्रेम को अच्छी तरह दर्शाता है। इसको सुनकर व्हायोला (Viola) के हृदय पर जो चोट पहुँची और उसके चेहरे पर जो भाव-भंगी हुई, उससे औरसिनो हार गया कि व्हायोला भी कहीं प्रेम में फँस चुकी है। औरसिनो के इस सन्देह से कथोपकथन कहाँ तक बढ़ा है और उससे नाटक के कार्य के अग्रसर होने की कितनी सम्भावना हुई है, यह उस ग्रन्थ के पाठक को ही मालूम हो सकता है।

शेक्सपियर की प्रारम्भिक कविताएँ

यह पता लगाना कि किसी कवि का कवि-जीवन कब से प्रारम्भ हुआ, बहुत बड़ी बात है। बड़े-से-बड़े जीवन-चरित में भी कोई इस बात का पता लगाने में असमर्थ हो जाता है। यह इसलिये कि कवि-जीवन साधारण जीवन के इतिहास के समान साफ नहीं रहता; वरन् अत्यन्त गुह्य रहता है। वास्तव में पूछिये, तो मातृ-भाषा की शिक्षा का और उसकी सुन्दरता एवं ध्वनि आदि का ज्ञान कवि-जीवन में जन्म ही से होने लगता है। हम केवल यह जानकर कि अमुक कवि के

कवि-हृदय का प्रथम विकास उसी समय हुआ होगा, जिस समय उसने सूर तथा तुलसी के पद्यों का प्रथम बार मनन किया होगा, सन्तोष कर लेते हैं। कीट्स (Keats) का हृदय कवि-हृदय में परिवर्तित हो गया, ज्यों ही उसने स्पेन्सर की कविता पढ़ी। किसी एक घटना ही से कवि-हृदय का बनना, या बिगड़ना असम्भव नहीं है; पर आश्चर्य-प्रद अवश्य है। कवि-सम्राट् शेक्सपियर के सम्बन्ध में भी एक छोटी-सी घटना कही जाती है। उसका उल्लेख यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है।

शेक्सपियर के समय में इङ्गलैण्ड में कोई बड़ा-जंगल था। बड़े-बड़े लोगों को शिकर खेलने की आदत थी। उन लोगों ने अपने-अपने बाग और छोटे-छोटे कृत्रिम वन बनवाये थे। उन बागों और वनों में कोई शिकार नहीं कर सकते थे। कहा गया है कि सर टामस लूसी से अनबन हो जाने के कारण शेक्सपियर को लण्डन जाना पड़ा था। उसकी कथा इस प्रकार है कि शेक्सपियर जब कुसंगति में पड़ गया, तो रात के समय जा-जाकर लूसी के बाग से खरगोश पकड़ लाता था। लूसी का बाग भी स्ट्रेटफोर्ड के निकट ही था। खरगोश चुराने के कारण लूसी ने शेक्सपियर को कई बार खूब पिटवाया; क्योंकि उस समय इस प्रकार

के अपराधी को खूब दण्ड दिया जाता था और खरगोश का तिगुना मूल्य वसूल किया जाता था। लूसी का अर्थ अंग्रेजी में 'जूँ' भी होता है। लूसी से तंग आकर उसके अपमानार्थ उसने एक कविता बनाई। उसने लूसी के लिए 'जूँ' शब्द का अनादर के अर्थ में व्यवहार किया है। विश्व-कवि की यह सबसे पहली कविता थी। कहते हैं, इस कविता से लूसी इतना आग-बबूला हुआ कि बेचारे शेक्सपियर को अपनी जान बचाकर लण्डन भाग जाना पड़ा।

१६ वीं शताब्दी की अंग्रेजी-कविता का जन्म ऐन बोलिन के कोर्ट में हुआ। कवियों का मुखिया सूरे (Surray) का नवाब था। उसकी कविता में जीत का अधिक अंश मिला रहता था। ऐसी जीत-मयी कविता बराबर जहाँ-तहाँ नाच आदि में गाई जाती थी। सम्भव है, शेक्सपियर को उस प्रकार की कविता से परिचय पाने का पूरा मौका मिला होगा।

शेक्सपियर की पहली कविताएँ Venus and adonis और The Rape of Sucreen हैं। इनके सारांश को समझने के लिये हमें उस समय के जोवन क्रान्ति पुनर्जीवन (Lenaissance) के प्रभाव पर थोड़ा ध्यान देना पड़ेगा। इसके पूर्व लोगों में जो नैतिक

विचार फैले थे, वे संकुचित थे। लोगों के कर्त्तव्य और विचार दोनों निर्धारित थे। किसी का, निर्धारित मर्यादा से बाहर जाना, पाप समझा जाता था। पर नई क्रान्ति ने लोगों को स्वतन्त्र बना दिया। मनुष्य अपना स्वामी अपने ही को समझने लगा। सोचने, विचारने और काम करने में वह प्रायः स्वतन्त्र हो गया। जैसे छुट्टी होने पर लड़के स्कूल से निकलते हैं, तो उन्हें स्कूल के नियमों का नियन्त्रण नहीं रहता, वे खुशी होकर मन-माना खेल-कूद किया करते हैं, कितने निरर्थक बातों के लिये यत्न किया करते हैं, उसी प्रकार उस समय के व्यक्ति विचार-बद्धता की जंजीर से मुक्त होकर मन-माना सोचने और विचारने लग गये। शेक्सपियर भी इस प्रभाव से वंचित न था। सबसे बड़ी धुन जो उसे इस प्रभाव से लगी, वह सौंदर्य-प्रियता की धुन थी। यही सौंदर्य-प्रियता उसकी उपर्युक्त दोनों कविताओं का मूल कारण कही जा सकती हैं। वे दोनों कविताएँ चित्र को देखकर लिखी गई थीं। शेक्सपियर चित्र का प्रेमी था और उन कविताओं के मूल चित्र ने उसके हृदय को मोह लिया था। इन कविताओं के करते समय शेक्सपियर ने इन्हें सुन्दर बनाने का पूरा यत्न किया है। भाषा का चमत्कार अधिक ला दिया है। यही कारण है कि यद्यपि इन कविताओं का विषय

निराशा, पाप, मनोवृत्तियाँ और आपत्तियाँ आदि हैं, तथापि इनके पढ़ने से हृदय में मानसिक अवस्थाओं के लिये सहानुभूति नहीं होती, और इसी कारण किसी प्रकार की व्यथा भी नहीं होती । व्यथा नहीं होने का कारण कवि की हृदय-शून्यता नहीं है ; पर कारण यह है कि इन कविताओं के करते समय कवि वास्तविक जीवन से बहुत दूर रहा है। जीवन, चित्र में चित्रित है और चित्र का प्रतिबिम्ब उसकी कविता है।

उपर्युक्त दोनों कविताओं के पश्चात् बहुत दिनों तक शेक्सपियर की न कोई कविता निकली और न कोई नाटक ही। हाँ १६०६ में उसकी चतुर्दश-पदी (Sonnets) कुछ कविताओं के संग्रह अवश्य निकले। ये पद्य बड़े महत्त्व के हैं। यद्यपि शेक्सपियर के सभी नाटक उसके हृदय के परिचायक कहे जा सकते हैं, तथापि ये पद्य अधिक महत्व के इसलिये हैं कि इनके द्वारा हम कवि-हृदय का सीधे-सीधे परिचय पा जाते हैं। उसके निज के भाव, विचार, हार्दिक व्यथा तथा आनन्द हम इनसे जान सकते हैं। इन पद्यों में से कुछ ऐसे हैं, जो एक पुरुष को सम्बोधन कर कहे गये हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जो कवि का जीवन-सम्बधी कुछ ऐसी घटनाओं से सम्बन्ध रखते हैं, जिनका हमें ज्ञान नहीं है। इस प्रकार का एक

पद्य यहाँ दिया जाता है। कहा जाता है शेक्सपियर को एक स्त्री से प्रेम था। उसके एक मित्र भी था। वह प्रेमिका शेक्सपियर को छोड़कर उसके मित्र से प्रेम करने लगी। इसी बात का शेक्सपियर ने इस पद्य में उल्लेख किया है:—

Two loves I have of comfort and despair,
Which like two spirits do suggest me still ;
The better angle is a man right fair,
The worser spirit a woman colour'd ill;
To will me soon to hell, my female evil.
Imoteth my better angel from my side.

शेक्सपियर के सौनेटस (चतुर्दश-पदी कविताओं) में यत्र-तत्र प्रेम का सुन्दर और मुग्धकारी चित्र खींचा गया है। इस प्रकार के कुछ पद्य हम 'शेक्सपियर और उसका प्रेमोन्माद' के परिच्छेद में उद्धृत कर आये हैं। ये पद्य वास्तव में कवि के हार्दिक भावों के प्रत्यक्षीकरण ही हैं। अधिकांश पद्य सूक्ष्म विचार और सुन्दर शब्द-योजना के लिये प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर के नाटक और उसके जीवन के विभाग

शेक्सपियर के रचे लगभग सैंतीस नाटक हैं। ऐतिहासिक नाटकों को छोड़कर प्रथानुसार वे सभी दो

विभागों में बाँटे जाते हैं—सुखान्त और दुःखान्त। प्रायः सुखान्त नाटक से उसी नाटक का बोध होता है, जिसका नायक आनन्द-पूर्व्वक रंगमंच से गुजरता है, और वह विजयी होकर आनन्द प्राप्त करने में समर्थ होता है। जिसका अन्त अच्छा होता है, वह भी सुखान्त नाटक की परिभाषा है। दुःखान्त नाटक का नायक रंगमंच के साथ-साथ विश्वमंच से भी विदाई ले लेता है। इसका अन्त अच्छा नहीं होता। यदि इस विचार से शेक्सपियर के नाटकों को उपर्युक्त दो विभागों में बाँटें, तो भारी भूल होगी। 'रोमियो और जूलियट' में मौन्टेग और कैप्लेट दोनों घराने के लोगों में मेल हो जाता है। प्रेम का व्यवहार होने लगता है। पर 'रोमियो और जूलियट' की मृत्यु हो जाती है। इसको सुखान्त या दुःखान्त क्या कहा जाय? ट्रोयालस और क्रेसिडा दोनों जीते रहते हैं; पर वह नाटक दुःखान्त के लक्षणों से भरा है। असल बात यह है कि शेक्सपियर के नाटकों का इस प्रकार विभाग नहीं हो सकता है। उसके कुछ नाटकों को छोड़, अन्य सभी ऐसे हैं, जिनमें दुःखान्त और सुखान्त दोनों के सूचक तत्त्व पाये जाते हैं। दुःख और सुख का अभिन्न सम्मिश्रण है। किसी नाटक को बिना अन्त तक पढ़े, कोई यह नहीं कह सकता कि अन्त में वह नाटक किस

रूप में समाप्त किया जायगा—दुःखान्त में या सुखान्त में। कभी-कभी तो कठिन विपत्ति और कष्ट से भरा नाटक भी अन्त में एकाएक सुखान्त बना दिया जाता है। यदि 'वेनिस के सौदागर' को सुखान्त कहें, तो खुद सौदागर साइलक के भाग्य को देखकर ही जी खटक पड़ेगा। सौदागर एक प्रकार से निर्दोष है। उसकी ज्यादती केवल इतनी ही है कि वह ऋण का व्याज सख्ती से वसूल करता है और अधिक सूद लेता है; पर उसके प्रति कैसा व्यवहार किया जाता है? उसी के शब्दों में सुनिये:—

'He hath hated me, stwarted my gains, scorned my desires and laughed at my loss, and what is his reason? That I am a Jew. Is not a Jew man? Hath not a Jew tongue, eyes, passions. Senses and desires'?

साइलक ने ऋण के लिए अन्टोनियो पर नालिश की है। न्यायालय में न्याय हो रहा है। उल्टे साइलक पर ही विपत्ति आ जाती है। उसका चित्त व्यथित है। उसकी जाति-भर से घृणा की गई है। वह उसे सह नहीं सकता। अन्टोनियो के व्यवहार से उसे हार्दिक दुःख पहुँचा था; अतः व्यथित चित्त से वह अपनी रक्षा के लिये न्यायाधिकारी से कहता है:—

"उसने मुझसे,—मेरी जाति से घृणा की है, लाभ

पाने की मेरी आशा नष्ट कर दी है, लालसा पर थूँक फेंका है और मेरी हानि की हँसी उड़ाई है, पर यह किस लिए? इसलिए कि मैं यहूदी हूँ। क्या यहूदी मनुष्य नहीं होते? क्या यहूदी को भी औरों की नाईं जी, आँखें, इच्छाएँ, इन्द्रियाँ और वासनाएँ नहीं होती हैं?

साइलक अपने को निर्दोष समझता है। कुछ अंशों में यह ठीक भी है। चूँकि वह यहूदी है और सूद लेता है; इसलिए अन्टोनियो का उससे घृणा करना और उसका शत्रु बनना अनुचित था; अतः थाड़ी देर में जब फैसला सुना दिया जाता है और उसे मालूम होता है कि उसकी सारी सम्पत्ति उसके हाथ से निकलकर उसकी पुत्री के हाथ चली जायगी, तो उसके ऊपर दुःख का पहाड़ टूट पड़ता है। वह कुछ अधिक नहीं कहकर टूटे हृदय से केवल यही कहता है कि:—

"I pray you give me leave to go from hence:
I am not well. Send the deed after me.
And I will sign it''

अर्थात् "कृपया मुझे जाने दें। मेरा मन अच्छा नह ह। मेरे यहाँ दस्तावेज भेज दें। मैं उसपर हस्ताक्षर कर दूंगा।"

साइलक की उक्त बातों से जब विदित हो सकता है

कि उसे कितना दुःख है और उस दुःख में औचित्य का अंश कितना है, तो उसके ऐसे मुख्य पात्र का अन्त भला न होते हुए भी 'वेनिस के सौदागर' को सुखान्त कैसे कह सकते हैं ?

शेक्सपियर के नाटकों में सुख और दुःख के सम्मिश्रण के अलावा यह बात भी देखने में आती है कि उसने दोनों प्रकारके नाटकों के लिये दो प्रकार की शैली का व्यवहार नहीं किया है। दोनों प्रकार के नाटकों के पात्र एकही राग अलापते हैं। दोनों के सामान एकही हैं। वह जिस कहानी को चाहे दुःखान्त या सुखान्त नाटक में ढाल दे। यह इसलिए नहीं कि वह जनता की आवश्यकता को लेकर लिखने बैठता था। जनता की आवश्यकता का ध्यान उसे अवश्य रहता था; पर उसके नाटक उसी प्रकार के हुए हैं, जिस प्रकार की उसके चित्त की अवस्था उन नाटकों के लिखते समय रही है।

अतः शेक्सपियर के नाटक दुःखान्त और सुखान्त-विभागों में विभाजित नहीं हो सकते। उसके जीवन के चार विभाग किये गये हैं और उन्हीं चार विभागों के अनुसार उसके सभी नाटक चार विभागों में विभाजित हुए मालूम पड़ते हैं। इस प्रकार के विभाग से उस के जीवन पर पूरी झलक पड़ती है। एक प्रकार से सभी

नाटक, चाहे वे सुखान्त हों या दुखान्त, एक ही भाग में आ जाते हैं; क्योंकि वे जीवन के एक ही काल के बने हैं। इस प्रकार प्रारम्भिक अवस्था में जब कवि के भावों में प्रौढ़ता नहीं आने पायी थी, अनुभव की वृद्धि हो रही थी और हर्षित रहना ही चित्त का एक कार्य था, उसके अत्यन्त आनन्दमय और अपरिपक्व ऐतिहासिक नाटक लिखे गये हैं। इस श्रेणी के नाटकों में शब्दाडम्बर और कल्पना की बहुलता पायी जाती है। इस श्रेणी में 'Love's Labour's Lost', 'Two gentlemen of Verona' और 'Richard III' आदि हैं। दूसरी अवस्था में जब चित्त की अवस्था कुछ गम्भीर हो गयी, ज्ञान बढ़ गया और मानव-प्रकृति से अधिक परिचय हो गया, तो उसके द्वारा सुन्दर और आनन्द-दायक नाटक एवं अच्छे इतिहास लिखे गये। 'वेनिस का व्यापारी' और 'ग्रीष्म रात्रि का स्वप्न' आदि इसी विभाग में हैं। तीसरी अवस्था में कवि के विचार कुछ प्रौढ़ हो गये। ईक्षण-शक्ति अधिक बढ़ गयी। जीवन की व्याख्या क्या है वह सूझ पड़ी। संसार की विपत्तियों से चित्त आ-पीड़ित होने लगा। इसी अवस्था में उसके बड़े-बड़े नाटक लिखे गये, जिनमें जीवन की व्याख्या अधिकांश रूप में की गयी है। 'हैमलेट', 'लीयर', मैकवेथ','ओथेलो'

और 'जूलियस सीजर' आदि इसी अवस्था के लिखे हैं। आँधी के बाद जिस तरह शान्ति छा जाती है, उसी प्रकार चौथी अवस्था में शेक्सपियर के चित्त में एक प्रकार की शान्ति छा गयी थी और एक नवीन अनुभव प्राप्त होने लगा था। इस अवस्था में 'शरद ऋतु की कहानी' 'तूफान' और 'सिवैलिन' आदि लिखे गये थे।

अस्तु शेक्सपियर के सभी नाटक उसके जीवन-काल से सम्बन्ध रखनेवाले हैं और जो इस बात को ध्यान में रखते हुए उसके नाटक न पढ़ेंगे, वे उसके जीवन का पूरा रहस्य नहीं समझ सकते; क्योंकि चारों विभागों का एक-एक नाटक क्रमशः पढ़ने से यह साफ मालूम होगा कि किस प्रकार शेक्सपियर की आत्मा का विकास हुआ और कैसे उसकी अनुभव-शक्ति और उसका ज्ञान दिनों-दिन बढ़ता गया।

कथानक पर शेक्सपियर का ध्यान

शेक्सपियर ने जितने नाटक लिखे उसने पहले उनकी मूल कहानी की खोज की और बाद कहानी कहने के लिए पात्रों का निर्माण किया। इसी कारण स्थान-स्थान पर देखा जाता है कि उसने अपने पात्रों के आचरण पर कम ध्यान देकर कहानी को बढ़ाने और रोचक करने का

अधिक ध्यान रखा है। उदाहरणार्थ कौर्डेलिया के आच-रण को देखिए। कौर्डेलिया के आचरण का खाका कवि ने अच्छा खींचा है। कौर्डेलिया ने अपने सादे और सच्चे स्वभाव से सचमुच में पाठकों के हृदय में स्थान पा लिया है। केवल उसका खरापन खटकता है। यदि वह कुछ भी परिस्थिति को समझ सकती और अपने सच्चे हठ को कम करती, तो अवश्य वह और अधिक आदर्श आचरण की होती। यह ठीक है कि विवाहित होने पर वह अपने पिता को पति से बढ़कर अधिक प्यार नहीं कर सकती ; पर उपस्थित परिस्थिति में उसको विचार से काम लेना चाहिए था ; किन्तु यदि हम कवि की ओर ध्यान दें, तो कौर्डेलिया का आचरण आनन्द-प्रद नहीं मालूम होगा। उसे तो कहानी कहनी थी। यदि वह उसके आचरण पर ही ध्यान देती, तो वह कहानी कह सकने में हरगिज समर्थ नहीं होती। कौर्डेलिया दूसरी बार पिता को प्रसन्न करती। उसे भी राज्य में हिस्सा मिलता। बस कहानी का ही अन्त हो जाता और कवि को अपनी कलम कान पर रख, घर में बैठना पड़ता।

'वेनिस के सौदागर' में जब मुख्य कहानी की समाप्ति हो जाती है और आनन्द की झलक चारों ओर मालूम पड़ने लगती है, तो एकाएक अंगूठी का प्रश्न छोड़-

कर पुनः नाटक को बढ़ाया जाता है और पाठकों को सन्देह में डाल दिया जाता है। यह किसलिए ? केवल कथानक को पूरा करने के लिए। 'जैसे को तैसा' में ईज़ायेला से उसके भाई के जीते रहने की बात छिपा रखी जाती है और उसे हार्दिक व्यथा पहुँचायी जाती है। अन्त में उसे विदित होता है कि उसका भाई जीता ही है। इन बातों से हमें मालूम होना चाहिए कि शेक्सपियर पात्रों के आचरण से बढ़कर कथानक पर विशेष ध्यान रखता था।

कवि-कृत न्याय और शेक्सपियर

प्रायः देखा जाता है कि छोटे-बड़े सभी कवि या नाटककार इस विषय को प्रतिपादन करने का ध्यान रखते हैं कि जो पात्र सच्चा और निर्दोष है, कष्ट पाने पर भी अन्त में विजय और आनन्द ही प्राप्त करता है। इसी के प्रतिकूल वे इस विषय के दर्शाने की भी चेष्टा करते हैं कि दुराचारी और पापात्मा व्यक्ति अवश्य दंड पाता है। उसका अन्त भला नहीं हो सकता। इसी प्रतिपाद्य सिद्धान्त को कवि-कृत न्याय कहते हैं। यथार्थ में कवि एक न्यायाधीश ही है। उसकी कचहरी में अपराधी और निरपराधी दोनों प्रकार के व्यक्ति जाते हैं। यदि वह

न्यायाधीश निरपराधी पात्र के लिये भी दंड का विधान कर दे और अपराधी भी कहीं-कहीं बच जाय, तो यह उचित न्याय नहीं कहा जायगा। हमें इस बात के विचार से भी शेक्सपियर के हृदय का कुछ ज्ञान होता है।

देख पड़ता है कि शेक्सपियर इस न्याय-विधान की अवहेलना करता है। वह अपने पात्रों को सदा उसके पाप-पुण्य का प्रतिफल देने को तैयार नहीं होता। बड़े-बड़े आलोचकों ने कहा है कि वह अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार न्याय का गला घोंटने के लिए भी तैयार हो जाता है, और पाठकों को अपने न्याय-विधान से शिक्षा देने की अपेक्षा उन्हें प्रसन्न रखने की ही अधिक चेष्टा करता है। अगर यह ठीक है, तो हमें देखना यह चाहिए कि शेक्सपियर ऐसा क्यों करता है और इससे क्या प्रमाणित होता है।

शेक्सपियर की उपर्युक्त न्याय-अवहेलना के दो कारण हैं। एक यह कि वह पाठकों को शिक्षा देने ही नहीं बैठा था; अतएव वह इस प्रकार की नैतिक बातों से अपनी अद्भुत शक्ति को जकड़ना नहीं चाहता था। दूसरा यह कि शेक्सपियर को वह बात भी आश्चर्य-जनक नहीं प्रतीत होती थी, जिससे हम नैतिक दृष्टि से अनुचित कहेंगे।

हमारा संसार बहुत संकुचित है और हमारा विचार भी ; अतः यदि हम किसी भी स्थान में धार्मिक या निर्दोष व्यक्ति को कष्ट भुगतते पाते हैं, और जिससे कष्ट पाना चाहिये उससे बाल-बाल बचा देखते हैं, तो हम ईश्वर के न्याय-विधान से असंतुष्ट हो जाते हैं। यह इसी लिए कि हमें यह पूर्ण निश्चय है कि संसार में अच्छे को अच्छा ही फल मिलना चाहिए और बुरे को बुरा ही ; पर शेक्सपियर ऐसा नहीं विचारता, न वह प्रकृति के न्याय-विधान से असंतुष्ट ही होता है। उसका संसार हम लोगों से बहुत बृहत् है। संसार में विचित्र-विचित्र बातें हुआ करती हैं। अच्छे-बुरे दोनों को सूर्य का प्रकाश मिलता है। वरुणदेव जल बरसाकर दोनों को तृप्त करते हैं। पवन-देव की कृपा दोनों पर एक-सी होती है। उसने भी अपने काव्य-द्वारा हमारे सामने उसी संसार का प्रतिरूप रक्खा है जिसके पारितोषिक और दंड हमें आश्चर्यित किये बिना न रहेंगे। इस प्रकार के प्रतिपादन से उसने अपनी प्रकृति-सा, विशाल हृदय का, परिचय दिया है। जिस प्रकार प्रकृति को अपने अद्भुत न्याय से असंतोष नहीं होता, उसी प्रकार उसे भी खेद नहीं होता। अस्तु, उसके जिस पात्र को हम कोमल और पवित्र पाते हैं, उसे भी वह कठोर और दुष्ट व्यक्ति के हाथ देकर प्रत्यक्ष रूप

में कवियों के न्याय-विधान की रीति का भंग करता है; पर इस बात से भी एक प्रकार उसका बड़प्पन ही प्रकट होता है। अ-स्वाभाविक वर्णन का ऐसा एक उदाहरण यहाँ देना भी विषय से बाहर की बात न होगी, जिसमें उसने एक प्रिय-से-प्रिय और सुन्दर-से-सुन्दर पात्र के मत्थे बुरे कामों का दोष मढ़ा है, पर साथ ही इस विलक्षणता से काम लिया है कि उक्त पात्र के प्रति हम लोगों की श्रद्धा और सहानुभूति रत्ती-भर भी कम नहीं होती।

प्रारम्भ से ही ओथेलो का आचरण शेक्सपियर अत्यधिक सुन्दर और आदर्श बनाता गया है। ओथेलो का हृदय कोमल, दयालु, साहसी और उदार है। दृश्य-प्रति-दृश्य उसका आचण आदरणीय होता जाता है और अन्ततः इतना सुन्दर मालूम पड़ता है कि उसके हाथ से किया गया कोई भी बुरा काम या उसके हृदय का कोई भी बुरा भाव हमारे जी में खटकने लगता है। पर ओथेलो क्या करता है? वह निर्दोष और भोली-भाली स्त्री के प्रति झूठी शंका धारण कर लेता है। अन्त में उसके हाथ से ऐसा काम होता है कि कठोर-से-कठार हृदयवाला व्यक्ति भी उस दृश्य को अपनी आँखों से नहीं देखना चाहेगा।

औथेलो के हृदय में क्रोध और शंका की आग धधक रही है। हृदय अब जला तब जला हो रहा है। प्राणाधिक-प्रिये डेस डिमोना को वह विश्वास-घातिनी समझ लेता है। निर्दोष डेस डिमोना किं कर्तव्य विमूढ़ होकर निद्रा की गोद में लेट जाती है। औथेलो चुपके से अपने कोमल हृदय में भयंकर भाव भरे हुए उसके निकट जाकर उसके लाल चरण का अन्तिम बार चुम्बन करता है। डेस डिमोना चौंक उठती है और अपने प्राण-प्रिय को एकटक से देखने लगती है; पर बीच ही में औथेलो के हृदय की धधकती हुई आग और भी प्रज्वलित हो उठती है और वह बिछौने के वस्त्र से लपेटकर निरप-राधिनी डेस डिमोना का प्राण ले लेता है। हत्या के बाद उसे यथार्थ बात मालूम होती है और तब वह डेस डिमोना को निर्दोष समझकर अपने किये पर पश्चात्ताप करता है और आत्म-घात कर लेता है।

औथेलो और डेस डिमोना दोनों का आचरण पवित्र है। पर दोनों का अन्त खराब होता है। दोनों को असीम व्यथा पहुँचाई जाती है। यही प्रकृति का विचित्र न्याय है। और इसी का प्रत्यक्षीकरण शेक्सपियर ने अपने नाटकों में कर दिखाया है। वहाँ पर यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि कवि ने किस चतुरता से औथेलो के प्रति हम-

लोगों की श्रद्धा और सहानुभूति कायम रक्खी है। औथेलो से घृणा न कर हम उस पर तरस ही खाते हैं, यह क्यों ? इसका एकमात्र कारण कवि की अलौकिक कल्पना-शक्ति है। उसने औथेलो के साथ-साथ एक ऐसे पात्र का निर्माण किया है जो खुद औथेलो के दूषित काम का उत्तरदायी बन बैठता है, और औथेलो को यथार्थतः निर्दोष बना देता है। पवित्रात्मा औथेलो के हृदय में कभी अपनी प्रियतमा के प्रति शंका होती ही नहीं और कभी होती भी तो वह उसे दूर कर सकता था ; पर इयागो (Iago) कब शान्ति लेनेवाला था। उसी ने तो कोमल-से-कोमल औथेलो के पाषाण हृदय को परिवर्तित कर दिया।

शेक्सपियर और उसकी नैतिकता

शेक्सपियर की नैतिकता भी हमें आश्चर्यित करती है। उसकी नैतिकता का विचार कर हम उसके उदार हृदय का शीघ्र पता लगा सकते हैं। प्रसिद्ध समालोचक हज़लिट ने एक स्थान पर कहा है कि—"शेक्सपियर सभी लेखकों से कम नैतिक (Moral) था ; क्योंकि नैतिकता से संकुचित भाव का बोध होता है। पर शेक्सपियर सारे मानव-समाज से सहानुभूति रखता था।"

ऐसा कहने का हज़लिट का यही भाव है कि साधारणतः वही मनुष्य नैतिक होता है, जो बुरी बातों को, और बुरे मनुष्यों को दोष-युक्त ठहराता है, तथा उनसे दूर रहता और उनके विरुद्ध आवाज उठाता है; पर शेक्सपियर ऐसा मनुष्य नहीं था। वह उदार-से-उदार था। अपराधियों की वह प्रशंसा नहीं करता था; पर वह उससे घृणा भी नहीं करता था। ऐसी अवस्था में वह क्यों संकुचित नीति का अवलम्बन करता? दोषी व्यक्ति को वह क्योंकर दोषी करार देता, जब कि उनका दोष उसे अस्वाभाविक नहीं मालूम पड़ता था। वह समझता था कि मनुष्य दोषी भी होते हैं। यदि वह कार्याकार्य या नीति-अनीति की जाँच करने लगता था, तो दोनों पक्षों के गुण-दोष का वर्णन कर देता था; पर यह नहीं कहता था कि अमुक दोष-युक्त और अमुक निरपराधी है। वह पक्षपात न कर तटस्थ रहता था। उसके सामने हमारी दृष्टि से अपराधी और निरपराधी दोनों के कार्य स्वाभाविक हैं और क्षम्य हैं। उसकी नैतिकता की इस उदार नीति का उदाहरण हम उसके "जैसा का तैसा" नामक नाटक में ज्यों-का-त्यों देख सकते हैं। उसने जितने नाटक लिखे हैं, सबसे बढ़कर इसी नाटक में उसने नैतिक बातों का विवेचन किया है; अतः शेक्स-

पियर की नैतिकता जानने के लिये पहले हम संक्षिप्त में वह कहानी लिखे देते हैं।

कहानी

वियना-नगर में एक कानून यह था कि जो व्यक्ति अपनी स्त्री के सिवा दूसरी स्त्री के साथ रहेगा, या सम्बन्ध रक्खेगा, वह मृत्यु का दण्ड पायेगा। नगर का राजा जो ड्यूक कहलाता था, बड़ा कोमल-हृदय था। वह उक्त नियम का पालन अपनी प्रजा से नहीं करवा सकता था। उसकी कोमल-हृदयता का लोग अनुचित उपयोग करते थे। प्रतिदिन नगर की प्रतिष्ठित माताएँ ड्यूक के यहाँ इस नियम के उल्लंघन करने की शिकायत करने आती थीं। इसलिये ड्यूक, अपने बड़े मन्त्री एञ्जेलो के हाथ में नियम-पालन का भार सौंप-कर, स्वयं गुप्त वेष में सब तमाशा देखने लगा। एञ्जेलो पक्का मनुष्य था। न्याय में वह दूध-का-दूध और पानी-का-पानी करता था। कड़ा ऐसा था कि उसके लिये नियम-पालन करना कुछ कठिन काम नहीं था। धार्मिक और सत्यवादी इस प्रकार का था कि कभी सत्य-मार्ग से डिग नहीं सकता था। इन्हीं कारणों से ड्यूक ने इसके हाथ अपना कार्य-भार सौंपा था।

ड्यूक को गये थोड़े ही दिन हुए कि संयोग से क्लौ-

डियो-नामक एक पुरुष ने जूलियट नाम की एक स्त्री को बहकाकर अपने साथ कर लिया। इस अपराध के कारण एञ्जेलो ने उसे मृत्यु की सजा दी। क्लौडियो की एक बहन ईजावेला थी। वह जैसी ही सुन्दर थी, वैसी ही धार्मिक भी। काम-लिप्सा उसे छू तक नहीं गई थी। वह दयालु थी। भाई के निहोरे पर उसे बचाने के लिये एञ्जेलो के पास प्रार्थना करने गई। पहले तो एञ्जेलो ने कुछ सुनवाई नहीं की; पर पीछे उसने ईजावेला पर मोहित होकर कहा—"यदि तू मुझे वरण करे तो मैं तेरे भाई का प्राण छोड़ दूँ। एञ्जेलो भी मनुष्य था, देवता नहीं। उत्तम आचरण रखते हुए भी मनुष्य वासना के कीचड़ में फँस जाता है। एञ्जेलो की वही हालत हुई। पर उससे ईजावेला अधिक दृढ़ थी। वह अपने भाई की जान बचाने के लिये अपना आचरण भ्रष्ट कर लज्जा की घूँट पीना नहीं चाहती थी। न उसकी आत्मा ही इस बात को कबूल करती थी कि भाई के लिये अपना सतीत्व भी नष्ट किया जाय। अस्तु, उसने क्लौडियो से कहा—"तुम मरने को तैयार हो जाओ, जिस शर्त पर तुम छोड़े जा सकते हो, वह अत्यन्त लज्जा-स्पद है। तुम्हारे लिये सिर नीचाकर जीना किस काम का होगा?" पर क्लौडियो को अपनी जान बहुत

प्रिय थी। वह बहन का यश नष्ट करके भी जीना चाहता था। ईजावेला बहुत चिन्तित हुई। भाई के निहोरे से वह पुनः एञ्जेलो के पास गई ; पर इस बार भी उसका यत्न निष्फल गया। अन्त में गुप्त वेष धारी ड्यूक ने ईजावेला को चिन्तित देखकर राय दी और तरकीब बताई कि वह केवल शब्द में एञ्जेलो के शर्त को स्वीकार कर ले और निश्चित समय पर अपने बदले उसके पास उसी की परित्यक्ता स्त्री मेरीना को भेज दे। यही हुआ भी। इस पर भी क्लौडियो की मृत्यु की अन्तिम आज्ञा निकल गई। छिपे हुए ड्यूक ने किसी तरह उसे बचा लिया ; पर लोगों में यह प्रचार करवा दिया कि क्लौडियो मारा गया। दूसरे दिन ड्यूक ने स्वयं उपस्थित होकर अपना राज्य-भार अपने ऊपर लिया। ईजावेला ने भी राज-सभा में उपस्थित हो प्रार्थना की कि जिस अपराध के कारण उसका भाई मारा गया है, ठीक वही अपराध स्वयं एञ्जेलो ने किया था ; और उसके साथ विश्वास-घात भी। ड्यूक तो सब जानता ही था। एञ्जेलो की सब कमजोरी साबित हो गई। पर ड्यूक ने उसे दण्ड नहीं दिया। उसे स्वयं पश्चात्ताप हुआ और उसने अपनी स्त्री को फिर से अपना लिया। कृतज्ञ ईजावेला का विवाह भी पीछे ड्यूक से हो गया।

इसी कहानी से शेक्सपियर की नैतिकता हमें साफ-साफ मालूम होती है। इसमें वह किसी को भी अन्त में दण्डित नहीं करता है और न किसी को दोषी ठहराता है। जो व्यक्ति क्लौडियो को दुष्ट और दुराचारी समझते हैं, वे जरूर उसे दण्डित देखना चाहेंगे; पर उदार-प्रकृति शेक्सपियर के लिये न वह दुष्ट था और न पापाचारी। वह साधारण मनुष्य था। उसे भी वासना थी। वह वासना नहीं रोक सकता था। शेक्सपियर को उस पर दया आई। एञ्जेलो भी दुष्ट नहीं था। उसकी मानवी कमजोरी ने थोड़े समय के लिये उसकी पवित्र आत्मा पर विजय पा ली थी; पर वास्तव में उसकी आत्मा नीच नहीं थी। देखिये, वह स्वयं काम-वासना को सम्बोधन कर कहता है कि:—

"O Cunning enemy, that to catch a sairt
with saints doth hail thy hook."

अर्थात्—धूर्त शत्रु, मेरी पवित्र आत्मा को फँसाने के लिये तूने जाल भी बड़ा फैलाया है।

एञ्जेलो उस संकटावस्था से बचने के लिये ईश्वर से सच्चाई के साथ प्रार्थना भी करता है; पर उसकी आत्मा अन्त में परास्त हो जाती है। वासना-अतिरेक से ईजावेला के विना सारा संसार उसे निकम्मा विदित

होता है ; लेकिन तो भी उसकी सचाई स्वयं ईजावेला के वचन से भी साबित होती है । जब एन्जेलो अपना अपराध स्वीकार कर लज्जित हो जाता है और दण्ड पाने के लिये तैयार होता है, तो ईजावेला कहती है :—

I partly think
A due sincerity governed his deeds
Till he did look on me.

"मैं भी कुछ-कुछ सोचता हूँ कि वह उस समय तक सचाई से काम लेता रहा, जब तक उसकी नजर मेरे ऊपर न पड़ी थी ।"

ईजावेला कठोर और सुन्दर है। स्वच्छता से बढ़-कर स्वच्छ है ; पर उसके प्रति सहानुभूति वहीं पर कम हो जाती है, जहाँ पर एक दीन मनुष्य का हार्दिक दुःख उसे नहीं पिघलाता है। देखिये, शेक्सपियर ने उसकी कैसी चुटकी ली है :—

"Then Isabel live chaste, and brother die
More then our brother is our chestity."

अर्थात्—ईजावेला, मजे से अपनी पवित्रता कायम रक्खो, और अपने भाई को मरने दो ! भाई से बढ़कर पवित्रता ही हमारी प्यारी है !

ईजावेला मन्दिर में आजीवन पवित्र जीवन व्यतीत करने जा ही रही थी कि उसे अपने भाई का करुण-क्रन्दन

सुन लौटना पड़ा। शेक्सपियर चाहता था कि वह संसार से दूर न रहे। संसार से अलग रहकर कोई व्यक्ति अपना व्यक्तित्व नहीं प्रकट कर सकता। एकान्त-वासी व्यक्ति से संसार को कोई लाभ भी नहीं पहुँचता; अतः शेक्सपियर ने उसे निरा धार्मिक जीवन व्यतीत करने से बचा लिया और अन्त में ड्यूक से उसके विवाह का विधान भी कर दिया। उसका सिद्धान्त है—

No man is the lord of anything
Till he communicates his parts to others.

जब तक मनुष्य अपनी शक्ति-भर दूसरे को लाभ नहीं पहुँचायेगा, तब तक उसकी सत्ता निरर्थक है। अस्तु, शेक्सपियर न तो ईजावेला की प्रशंसा करता है और न एञ्जेलो या क्लौडियो की निन्दा ही। वह सदा तटस्थ है। वह उपस्थित विषय के दोनों पक्षों को हमारे सामने रख देता है और स्वयं दर्शक बन जाता है। वह दोनों पक्ष का वकील (Advocate) तो बनता है; पर फैसला सुनानेवाला (Gudge) नहीं।

सारी कहानी का सारांश ईजावेला और एञ्जेलो के निम्नांकित प्रश्नोत्तर में है:—

Angelo—"Plainly conceive, I love you."
Isabela—"My brother did love Juliet, and you fell me,
That he shall die for it"

एञ्जेलो—"अच्छी तरह समझो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

ईजावेला—"मेरे भाई ने जुलियट से प्रेम किया और तुम कहते हो, वह इसके लिये प्राण-दण्ड पायेगा।"

शेक्सपियर ने इन वाक्यों से सारे समाज की चुटकी ली है। कानून तो ऐसा कड़ा है कि जो कोई उस अपराध से दोषी ठहराया जाय, वह अवश्य मरे और समाज में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जो इस अपराध के फन्दे में कभी न आये; अतः शेक्सपियर को अपना सारा समाज ही उस कठोर नियम से जकड़ा दीखता है। जो कमजोरी वह क्लौडियो में देखता है, वह एञ्जेलो और एक प्रकार से ईजावेला में भी। वह दोषी ठहरावे तो किसको? उसको तो मनुष्य-मात्र, चाहे वह किसी रूप में हो, प्रिय है। यही शेक्सपियर की नैतिकता है। इसे भला कहिये या बुरा; पर संसार में उसके प्रख्यात होने का अगर कोई कारण खोजा जाय, तो उसकी यही सहानुभूति-पूर्ण नीति आगे आयेगी। यदि वह समाज के छोटे-बड़े, अच्छे-बुरे, लुच्चे-लफंगे, शिक्षित-अशिक्षित और धनी-गरीब सभी प्रकार के पुरुषों से सहानुभूति न रखता, तो उनकी विभिन्न प्रकृति से वह हरगिज़ अवगत नहीं हो सकता और इस प्रकार

वह मानव-चरित्र का पूर्ण चित्रकार नहीं कहा जा सकता। क्योंकि इसी श्रद्धा और सहानुभूति के कारण उसने मानव स्वभावों पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था और इसी कारण हम उसे एकसाथ ही एक बड़ा मल्लाह, एक बहुत बड़ा राजा, एक बहुत बड़ा वकील, एक बहुत बड़ा व्याख्यान-दाता, एक बहुत बड़ा सेना-पति, एक बहुत बड़ा वीर, एक बहुत बड़ा प्रेमी, एक बहुत बड़ा दयालु, एक बहुत बड़ा कठोर, एक बहुत बड़ा चतुर, एक बहुत बड़ा मूर्ख, एक बहुत बड़ा हंस-मुख, एक बहुत बड़ा गम्भीर, एक बहुत बड़ा पापात्मा और एक बहुत बड़ा धर्मात्मा कह सकते हैं।

शेक्सपियर की स्त्रियाँ

यह कहा जा चुका है कि शेक्सपियर को मानव-स्वभाव का अपूर्व अनुभव था। इसी कारण उसने बहुत अच्छा चरित्र-चित्रण किया है। उसके पात्रों में स्त्री-पुरुष दोनों हैं; परन्तु उसने स्त्रियों का फोटो पुरुषों के फोटों से बहुत उत्तम खींचा है। जिस प्रकार चित्र उसने स्त्री-जाति का खींचा है, वह सब जाति और सब समय की स्त्रियों का चित्र कहा जा सकता है। उसने आदर्श चरित्र हम लोगों के सामने नहीं रखा है; पर जिस

प्रकार का चरित्र उसने हमें दिखलाया है, वह इतना स्वाभाविक और विश्व-व्यापी है कि उसकी समीक्षा से हमें कितनी ही बातों का पता चलता है। शेक्सपियर के हृदय में और इस प्रकार अंग्रेज-जाति के हृदय में स्त्रियों के प्रति कैसा उत्तम भाव था, इसका पूरा पता चलता है। यहाँ शेक्सपियर की स्त्रियों की कुछ विस्तृत विवेचना की जाती है।

शेक्सरपियर की प्रायः सभी स्त्रियाँ मनोहारिणी और सहृदया हैं। सभी के हृदय में प्रेम लबालब भरा है और प्रायः सभी के हृदय में प्रथम दर्शन से ही प्रेम का प्रादुर्भाव हो जाता है। जूलियट ज्यों ही रोमियो को प्रथम बार देखती है कि वह अपनी परिचारिका से कहती है:—

"Go, ask his nam, if he be married,
My grave is like tolee my wedding bed''

अर्थात्—जाकर पूछो, यदि उसका विवाह हो गया होगा, तो मेरी कब्र ही मेरे लिये विवाह की शय्या होगी।

फरनैन्डो को देखते ही मिरन्डा को भास होता है कि वह कोई ईश्वरीय पदार्थ का अवलोकन कर रही है। वह स्तम्भित हो जाती है। फरनैन्डो को भारी बोझ

ढोते देख वह रोने लगती है। चाहती है कि स्वयं उसका बोझ ढोऊँ और वह आराम करे। प्रेम और दया-भाव से वह विह्वल हो जाती है। वह वचन सँभालकर नहीं कह सकती। उसके हृदय में एक अपरिचित भाव की बाढ़ आ जाती है। वह फरनैन्डो से इस प्रकार बात-चीत करने लगती है:—

"Miranda—I am a fool to weep at what I am glad of,
"Fernando—Wherefore weep you ?
"Miranda—At mine unworthiness that dare not offer,
What I desire to give, and much less take,
What I shall die to want......
I am your wife, if you will marry me,
If not I will die your maid.

मिरन्डा—जो देखकर मुझे आनन्द हो रहा है, वही रुला भी रहा है।

फरनैन्डो—तुम क्यों रोती हो ?

मिरन्डा—रो रही हूँ अपनी उस अयोग्यता पर, जिसके कारण न तो मैं वह वस्तु समर्पण करने का साहस कर सकती हूँ, जिसे देने की मुझे हार्दिक इच्छा है, और न वही वस्तु ग्रहण करने का साहस कर सकती

हूँ, जिसकी प्राप्ति के लिये अपना प्राण भी देने को तैयार हूँ। मैं अपने को तुम्हें समर्पण करती हूँ। यदि तुम मुझसे विवाह कर लो तो मैं तुम्हारी पत्नी हूँ ; अन्यथा मैं मृत्यु-पर्य्यन्त कुँवारी ही रहूँगी।

शेक्सपियर की स्त्रियों का प्रेम बड़ा जोरदार है। उसकी धारा किसी भी बाधा से रोकी नहीं जा सकती। यदि रोकी जाती है, तो अन्धेर मच जाता है। भरी सभा में सुशीला और कोमलाङ्गी डेस डेमोनो अपने पिता का परित्याग कर देती है। उससे क्षमा-प्रार्थना भी नहीं करती और शत्रु की सेना के मध्य औथेलो की कोई परवाह न करती हुई सुदूर साइप्रस द्वीप को चल देती है। उसे इस समय केवल एक वस्तु के अतिरिक्त कुछ भी नहीं सूझता। एक पूज्य मूर्ति के ध्यान में उसका हृदय मग्न है। वह मूर्ति है औथेलो। जिसने उसके हृदय पर सर्वाधिकार प्राप्त कर लिया है। इस प्रकार के प्रबल प्रेम का परिणाम अचानक हुआ करता है। ओफेलिया पागल हो जाती है। जुलियट आत्म-घात कर लेती है।

इयोजिन का हृदय कितना कोमल है। ज्योंही वह सुनती है कि उसके स्वामी ने उसे प्यार करना छोड़ दिया है, क्योंकि उसने समझ लिया है कि वह विश्वास-

घातिनी है त्यों ही 'प्राणप्रिय की विश्वास-घातिनी !' कहती हुई मूर्च्छित हो जाती है। इयोजिन सरल हृदया है। वह डेस डिमोना की तरह गली जाती है; पर उसका हृदय सच्चा है, वह अन्त में अपने को निर्दोष प्रमाणित करके ही दम लेती है।

सरल हृदया डेस डिमोना का स्वभाव किस प्रकार स्त्री-स्वभाव का परिचायक है, देखिये—कैसियो, औथेलो और डेस डिमोना दोनों का प्रेमपात्र था। जब औथेलो ने एक समय कैसियो पर क्रोधित होकर उसे कुछ दण्ड दिया, तो कैसियो ने डेस डिमोना के पास प्रार्थना की, कि वह औथेलो से कहकर उसे मुक्त करा दे। डेस डिमोना को कैसियो पर दया आ गई। बस फिर क्या है, चाहे कैसियो दोषी हो या निर्दोष, उसके छुड़ाने से लाभ होगा या हानि, बिना इन बातों को समझे वह औथेलो से उसके छुटकारे के लिये अनुरोध करने लगती है। वह मनुष्यों के नियम तो कुछ समझती ही नहीं। अगर कुछ समझती है, तो यही कि कैसियो पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है; अतः वह कैसियो को शान्त्वना देती है और कहती है—चाहे जो कुछ हो, मैं अपने पति से तुम्हारा अपराध क्षमा करा के ही रहूँगी। वह औथेलो से कैसियो का अपराध क्षमा करने को कहती है।

औथेलो कहता है—"उसका अपराध बड़ा है। उसे शीघ्र छुटकारा नहीं मिलेगा।" उसपर वह कितनी घबराहट और सीधेपन से औथेलो से बात-चीत करती है। देखिये :—

"D. But shall't be shortly ?
O. The sooner, sweet, for you.
D. Shall't be tonight at supper ?
O. No, not tonight.
D. Tomorrow dinner, then ?
O. I shall not dine at home.
D. Why, then, tomorrow night ; or tuesday morn. On tuesday noon, or night ; on wednesday morn ; I pree thee, name the time, but let it not exceed three days : in faith he is penitent."

डेस डिमोना—क्या कुछ ही समय के बाद आप उसे माफ कर देंगे ?

औथेलो—प्रिये, जहाँ तक शीघ्र हो सकेगा, मैं तेरे वास्ते उसे क्षमा करूँगा।

डेस डि०—क्या आज रात भोजन के समय ?

औथेलो—आज रात नहीं।

डेस०—तो कल दिन में भोजन के समय ?

औ०—मैं कल उस समय घर पर नहीं रहूँगा।

डेस०—तो कल रात में, मंगल के सुबह में, उसी दिन दोपहर में, रात में या बुध के सुबह में ? प्रार्थना है कृपया निश्चित समय कह दीजिये ; पर इतना अवश्य ख्याल रखिये कि समय तीन दिन से अधिक न लगे। विश्वास कीजिये, वह पश्चात्ताप करता है।

व्हायला की निष्कपटता, धीरता और उसका दृढ़ प्रेम केवल इन दो ही पंक्तियों से मालूम होगा। वह ड्यूक से कहती है:—

I will do my best,
To woo your lady : yet a barful strife
Who ever I woo, myself would be his wife.

अर्थात्—मैं तुम्हारी प्रेमिका को सहमत करने के लिये कोई कसर न रक्खूँगी। (अपने मन में कहती है) पर यह कठिन कार्य है। चाहे जिस किसी स्त्री को उसके लिये सहमत करूँ ; पर मैं ही उसकी स्त्री होऊँगी।

व्हायला ड्यूक के आज्ञाकारी नौकर के वेष में एक सुन्दर रमणी है। वह स्वामी की आज्ञा यथासाध्य पालन कर कर्तव्य-च्युत भी नहीं होती। अपने प्राण-प्रिय के लिये दूसरी स्त्री को सहमत करने की ठान, अपनी अधीरता का परिचय भी नहीं देती और साथ-ही-साथ अपने दृढ़ प्रेम पर विश्वास रख अपनी आशा को फल-

व्रती करने का निश्चय भी प्रकट करती है। कैसा सुन्दर हृदय है! अनुभव से ही समझ में आ सकता है।

शेक्सपियर की प्रायः सभी स्त्रियाँ व्यवहार-चतुर और काफी सूझ रखनेवाली हैं। उसके पुरुष इस बात में स्त्रियों का मुकाबिला नहीं कर सकते। वे कल्पना कर सकते हैं; पर अक्सर उनकी कल्पनाएँ और भावनाएँ उन्हें असमर्थ बना डालती हैं। वे अपने ही द्वारा ठगे जाते हैं। मैकवेथ की स्त्री मैकवेथ को झिझककर कहती है।

What thon wouldst highly,
That wouldst thon holily ; wouldst not play false
And yet wouldst wrongly win.

बड़ी चीज प्राप्त करना चाहते हो; पर पवित्रता से। विश्वासघात भी नहीं करना चाहते और अनुचित रीति से प्राप्त भी करना चाहते हो।

इन पंक्तियों में मैकवेथ की स्त्री मैकवेथ को टाल-मटोल और शंकाओं को दूरकर व्यवहार-कुशल बनने को कह रही है।

रोजे लिण्ड और इमोजिन आदि का साहस भी प्रशंसनीय है। वे विपत्ति में घबड़ाती नहीं। वे किं-कर्तव्य विमूढ़ भी नहीं हो जातीं। शीघ्र उपाय सोच लेती हैं।

शेक्सपियर के पुरुष यदि इन सुकुमार-मना युवतियों की अवस्थाओं में पड़ते, तो उनकी अक्ल काम नहीं करती ; पर हम देखते हैं कि इयोजिन अन्ततः अपने धर्म की रक्षा करती है। रोजे लिएड लैराड़ो को प्राप्त करती है। पोर्सिया की बुद्धि की समता बड़े-से-बड़ा अक्लमन्द पुरुष भी नहीं कर सकता। और जूलियट ने उद्भ्रान्त प्रेम की लहरों में गोता खाते हुए भी जिस धीरता से समय-समय पर रोमियो के प्राण-भय को दूर किया, वह तो आश्चर्य-प्रद है ही।

ऊपर जो कुछ शेक्सपियर की स्त्रियों के सम्बन्ध में कहा गया है। उससे यह नहीं समझना चाहिये कि उसकी सभी स्त्रियों का चरित्र सुन्दर ही है। कवि ने दो-तीन स्त्रियों का चरित्र कुरूप भी खींचा है। और इस बात से उसकी रचना का यथार्थ रूप भी प्रकट होता है। वह आदर्श चित्र नहीं चित्रित करता था, यथार्थ चित्र चित्रित करता था ; अतः सभी स्त्रियों का जब सुचरित्र होना असम्भव है, तब शेक्सपियर क्योंकर सभी स्त्रियों को सुचरित्र ही बतलाता ; पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उसके समय में अधिकांश स्त्रियाँ पुरुषों से उत्तम आचरण की होती थीं और लोग भी उन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे। उस देश का भाग्य होता है जहाँ

कि स्त्रियाँ सुचरित्र होती हैं और जहाँ लोग उन्हें आदर करते हैं ; अतः शेक्सपियर के स्त्री-चरित्र से हमारे उन लेखकों और कवियों को सबक लेना चाहिये, जिनकी निगाह में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का आदर कम होता है।

शेक्सपियर के मुख्य-मुख्य नायक

कहा गया है कि शेक्सपियर के नाटकों में नायक प्रसिद्ध नहीं हैं। यह बहुत ठीक मालूम होता है। क्योंकि सिवा पंचम हेनरी और वैलिन्टाइन के और किसी भी अन्य पुरुष का आचरण निर्दोष, सुन्दर और प्रशंसनीय नहीं है। औथेलो वास्तव में बहुत बड़ा नायक होता, यदि वह अपने सरल स्वभाव के कारण दुष्ट इआगो की चाल से धोखा खाकर अपना सर्वनाश नहीं करता और नीच कार्य कर अपने चरित्र पर धक्का नहीं लगाता। हैमलेट केवल काल्पनिक युवक था। शोक और उदासीनता ने उसकी कार्य-शक्ति नष्ट कर दी थी। मैकवेथ बड़ा पुरुष होने पर भी अपनी प्रबल स्पृहा से विनष्ट हो गया। सीजर और एन्टनी वीर होने पर भी अपने अभिमान के कारण नष्ट हो गये। लियर के मित्र कैन्ट को उसके उजड्डपन ने ही खराब कर दिया।

शेक्सपियर के नाटकों में जहाँ कोई दुर्घटना होती है

तो वह केवल पुरुषों के दोष से। स्त्रियाँ उसका कारण नहीं होती। वरन् किसी दुर्घटना का यदि कहीं निवारण होता है, तो वह किसी-न-किसी स्त्री के कारण ही। हैमलेट, लियर, औथेलो और मेकवेथ जैसे मुख्य-मुख्य पात्रों के आचरण देखने से मालूम होता है कि उनकी निर्बलता या मूर्खता से ही अनिष्ट होता है। कुछ लोगों की राय है कि हेमलेट और औथेलो अपने गुणों के कारण ही कष्ट पाते हैं; पर यहाँ पर यह कहा जाता है कि उनके गुण से ही उनमें दोष आ जाता है। इस विषय के स्पष्टीकरण के लिये यहाँ उनके चरित्र की समीक्षा की जाती है।

मैकवेथ का चरित्र प्रारम्भ में अच्छा था; पर धीरे-धीरे खराब होता गया। युद्ध-क्षेत्र से जो आहत सिपाही डंकन के पास सूचना लेकर आया था, वह मैकवेथ की वीरता का इस प्रकार वर्णन करता है:—

For brave Macbeth—well he deserves that name—
Disdaining Fortime, with his brandished steel,
Which smoked with bloody excention,
Like Valour's minion carned out his passage
Till he faced the slave

अर्थात्, अपने नाम को सार्थक करनेवाला मैकवेथ भाग्य की कोई परवाह न करते हुए और अपनी रक्त-रंजित तलवार को चमकाते हुए साक्षात् वीर-मूर्ति की

नाई सामने की सेना को उस समय तक स्वर्ग-धाम पहुँ-चाता रहा, जब तक वह नीच स्वेनो के निकट उन्हें भी शिक्षा देने को नहीं पहुँच गया।

खुद मैकवेथ के अपने शब्दों से उसकी वीरता टपकती है, वह अपनी स्त्री से कहता है :—

I dare do all that may become a man
Who dares do more is none.

"मनुष्योचित सारा काम करने का मैं दावा करता हूँ, और जो इससे अधिक दावा करेगा वह मनुष्य नहीं है।

उसकी स्त्री जो उसके स्वभाव से परिचित थी, उसकी दयालुता के सम्बन्ध में कहती है :—

It is too full O' the milk of human kindness.

अर्थात् उसका स्वभाव दया से कूट-कूटकर भरा है। जिस दिन से मैकवेथ की तृष्णाग्नि प्रज्वलित हुई, उसी दिन से उसका चरित्र भ्रष्ट होने लगा। उसके सारे बुरे कामों का कारण उसकी विराट् तृष्णा ही है। डंकन को मारने के लिये तैयार होने का दूसरा कोई कारण नहीं है। वह स्वयं कहता है :—

I have no spur to prick the sides of my intent
Out only vaulting ambition.—

अर्थात्—मेरी इच्छा को उसकानेवाला मेरी तृष्णा के सिवा और कोई नहीं है।

इसी दुराशा के कारण वह अन्त में इतना धोखेबाज और अत्याचारी हो जाता है कि उसके सभी अधीनस्थ व्यक्ति उससे रुष्ट हो जाते हैं। एक बार जब वह बुरे काम में हाथ डालता है, तो पुनः बाधा पड़ने पर भी नहीं रुकता है, और बुरे मार्ग में अग्रसर ही होता जाता है, यहाँ तक कि अन्त में उसकी सहृदयता बिलकुल नष्ट हो जाती है और उसके स्थान में अमानुषिकता उसके हृदय में आकर घर कर लेती है। इस प्रकार बड़ा पुरुष होने पर भी उसका चरित्र घृणित और त्याज्य हो जाता है।

ओथेलो अपनी प्रियतमा डेस डिमाना को कितना चाहता है, देखिये वह कहता है :—

Excellent wretch ! Perdition catch my soul,
But I love thee ! and when I love thee not,
Chaos is come again.

अर्थात्—सर्वोत्तम रमणी ! मेरी आत्मा नरक के गढ़े में चाहे भले ही गिरे ; पर मैं तुझसे प्रेम करना न छोड़ूँगा ? और जब मैं तुझे प्यार करना छोड़ दूँगा, तो उस समय प्रलय आया ही समझना !

पर इस प्रकार पक्का प्रेम रखते हुए भी वह जब उसके प्रति शंका करने लगता है, तो उसका हृदय जलने लगता है। वह डेस डिमोना को देखना तक नहीं चाहता

और अन्त में उसे मार डालता है। अतएव सफल नायक होने से वंचित रह जाता है।

हैमलेट का आचरण इतना विराट् है कि वह समझ में नहीं आता है। उसके आचरण में साहस और संकोच, वीरता और कोमलता, कर्मण्यता और कायरता, आध्यात्मिक विचार और सांसारिकता आदि विरोधी गुणों का समावेश पाया जाता है। लोग कहते हैं कि हैमलेट का आचरण इस प्रकार का है कि कोई भी पाठक अपने को हैमलेट से भिन्न नहीं समझ सकता। कोई उसकी कल्पना को अपनी कल्पना समझता है, तो कोई उसकी उदासीनता को अपनी उदासीनता ; कोई उसकी असमर्थता को अपनी असमर्थता समझता है तो कोई उसकी सत्य-प्रियता को अपनी सत्य-प्रियता। महत्त्व यह कि सभी पाठक अपना एक-न-एक गुण उसमें अवश्य देखते हैं। इतने पर भी हैमलेट का चरित्र सर्व-गुण सम्पन्न और निर्दोष नहीं है। चाहे शोक के कारण हो, या अनिश्चितता के, चाहे कल्पनातिरेक के कारण हो, चाहे असमर्थता के कारण, वह अपने मुख्य कार्य में उचित समय पर सफलीभूत नहीं होता है। सफलीभूत तब होता है, जब उसका जीवन ही नष्ट हो जाता है। उसके पिता की आत्मा ने उसे अपने चाचा से

बदला लेने की आज्ञा दी थी। चाचा से बदला चुकावे, अथवा उसे राजा चाचा और अपनी माता का स्वामी समझ मुक्त करे, इस कर्तव्याकर्तव्य का वह निश्चय नहीं कर सका। अतः वह भी सफल-नायक न हो सका।

कुछ चुने हुए आलोचनीय पद्य

समालोचकों ने शेक्सपियर की जितनी प्रशंसा की है और जितनी कर रहे हैं, उस पर से उसकी प्रशंसा करने में मुझे कुछ दिक्कत नहीं होती ; पर मेरा यह प्रयत्न सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही निष्फल होगा। उसकी प्रशंसा करना किस प्रकार व्यर्थ है, यह भी उसी के शब्दों में सुनिये। वह कहता है :—

To gild refined gold, to paint the lily,
To throw a perfume on the violet
To smooth the ice or add another hue
Unto the rain bow, or with taperlight
To seek the beautions eye of heaven to garnish
Is wasteful aud ridiculous excess.

अर्थात्—सुन्दर सुवर्ण को सुनहला करना, गुलाब को रँगना, बनफसे के फूल पर सुगन्ध छिड़कना, बर्फ को चिकना करना, इन्द्र-धनुष में दूसरा रंग जोड़ना और सूर्य को बत्ती दिखाना व्यर्थ और हास्यास्पद बात है।

ठीक इसी प्रकार शेक्सपियर को बड़ा और यशस्वी

बतलाने का प्रयत्न करना निरर्थक है। अस्तु, उसके पद्यों में से कुछ आपके सामने रक्खे जाते हैं, वे स्वयं बतला देंगे कि शेक्सपियर का बड़प्पन क्या कुछ था ?

शेक्सपियर के पद्यों को चुनकर रखना एक महत कठिन काम है। कहा जाता है कि गेहूँ की रोटी टेढ़ी क्या और सीधी क्या ? शेक्सपियर के पद्य भी उसी प्रकार प्रायः सभी उत्कृष्ट हैं। अस्तु, किसको चुना जाय और किसको नहीं। पर चुनाव के प्रथानुसार कुछ पद्य दिये जाते हैं :—

निर्भयता—

Cowards die many times before their deaths:
The valiant never taste of death but once.
Of all the wonders that I yet have heard,
It seems to me most strange that men should fear
Seeing that death, a necessary end
Will come when it will come.

"कायर व्यक्ति अपनी मृत्यु के पूर्व कई बार मर चुकते हैं ; परन्तु वीर पुरुष एक ही बार मृत्यु का दुःख प्राप्त करते हैं। आज तक जो कुछ मैंने आश्चर्य की बातें देखी या सुनी हैं, उनमें सबसे अधिक आश्चर्य की बात यही मालूम होती है कि मनुष्य यह देखकर भी कि मृत्यु

अनिवार्य है और कभी-न-कभी अवश्य आवेगी, भयभीत हो जाते हैं।"

ऊपर की पंक्तियों में निर्भयता का अच्छा वर्णन है। वीर-रस शब्द-शब्द से टपक रहा है, मानो वीरता स्वयं रूप धारण कर सामने खड़ी हो। कायर पुरुष का कई बार मरना; पर वीर व्यक्ति का एक बार ही मरना, बहुत सूक्ष्म की बात हुई है। अनिवार्य मृत्यु से डरना सबसे अधिक आश्चर्य की बात कही गई है। इससे कविता में और ही जान आ गई है।

प्रेम-वर्णन—

Love is a smoke raised with the fume of sighs:
Being parged, a fire sparkling in lover's eyes:
Being nexed, a Sea nourished with lover's tears:
What is it else ? a madness most disereet,
A choking gall, and a preserving sweet

"प्रेम निःश्वास से सुलगती हुई धूम्र-युक्त आग है। साफ हो जाने पर वह चमकती हुई चिनगारी है, जिसका रूप हम प्रेमी-प्रेमिका की आँखों में देखते हैं। पुनः कष्ट प्राप्त होने पर वही प्रेम प्रेमी-प्रेमिकाओं के आँसू के समुद्र में परिणत हो जाता है। दूसरे शब्दों में इसे एक प्रकार का पागलपन कह सकते हैं। यह हृदय को काटनेवाला

कीड़ा है। इसे एक गंध भी कह सकते हैं, जो सदा सुवासित रहता है।"

उक्त पद्य में वियोगावस्था के प्रेम का बहुत स्पष्ट वर्णन है। वियोग-जन्य विकलता पद्य के पढ़ते-पढ़ते मानों मालूम होने लगती है।

×× ×× What 'tis to love.

It is to be all made of sighs and tears:—
It is to be all made of faith and serirce:—
It is to be all made of fautasy,
All made of passion, and all made of wishes;
All adoration, duty and doservance,
All humbleness, all patience, all impatience,
All purity, all trial, all observance.

उक्त पद्य में प्रेम के सभी लक्षण वर्णित हैं। एकसाथ प्रेम के इतने लक्षण पढ़कर पाठकों को यह पद्य अवश्य रुचेगा।

"प्रेम क्या है? आहों और आँसुओं का समूह है। विश्वास और सेवा का दूसरा रूप है। कल्पना और वासना का भण्डार है। अर्चना है, कर्तव्य है, नम्रता है, धीरता और अधीरता है, स्वच्छता है और जाँच है।"

Things base and vile, holding no quantity,
Love can transpose to form and dignity.
Love looks not with the eyes but with the mind;
And the refore is wing'd Cupid painted bluid;

Nor has love's mind of any jadgment taste;
Wings, and no eiges, figure unheedy haste;
And therefore is love said to be a child,
Because in choice he is sooft begniled,
As waggish boys in game themselves for swear
So the boy love is perjured every where.

"कामदेव को ठीक ही लोगों ने अंधा कहा है। क्योंकि वह अपनी आँखों से नहीं देखता, मन से ही देखता है। बुरे और तुच्छ विचार भी अंध-प्रेम के कारण सुन्दर और श्रेष्ठ मालूम होते हैं। प्रेमान्ध व्यक्ति की रुचि विचार-पूर्ण नहीं होती। अस्तु, कामदेव का स्वभाव लड़के के स्वभाव-सा कहा गया है। लड़के के समान वह भी अक्सर अपने प्रेम-पात्र के चुनने में ठगा जाता है। जैसे ठठोलिये लड़के प्रेम में शपथ खाते रहते हैं, उसी तरह कामुक पुरुष भी सर्वदा सौगंद ही खाते रहते हैं।"

कामदेव को अन्धों, बच्चों और ठठोलिये लड़कों से उपमा देना बहुत ठीक जँचता है। कामदेव के अन्धे होने ही से तो कामी व्यक्ति अंधा हो जाता है।

सच्चा प्रेम—

Come hither, boy,. If ever thou shalt love,
In the sweet pangs of it remember me:
For, such as I am, all true lover's are;

Unstaind and skittish in all motion else,
Some in the constant image of the creature
That is beloved.

सच्चा प्रेमी चाहे संसार को भूल जाय, अपने को भी भूल जाय ; पर अपने प्रेमी को नहीं भूलता। उसके हृदय में प्रेमी का ध्यान सदा एक-सा बना रहता है। प्रेम तत्त्व-दर्शी शेक्सपियर का एक पात्र दूसरे से कहता है—"यदि तुम कभी प्रेम करो, तो उस प्रेम की मीठी वेदना में भी मुझे स्मरण रखना ; क्योंकि सच्चे प्रेमी केवल अपने प्रेमी के ध्यान को छोड़ अन्य बातों में अनियमितता ही दिखलाया करता है। अस्तु तुम भी मुझे भूल न जाओ।"

उक्त पात्र के शब्दों से सच्चे प्रेमी का पूरा चित्र किस प्रकार खिंच गया है। थोड़ा ही विचारने से मालूम हो जायगा।

His words are bonds, his oaths are oracles;
His love sincere, his thoughts immaculate,
His tears pure messengers sent from his heart
His heart as far from frand as heaven from earth.

सच्चे प्रेमी का क्या लक्षण है? शेक्सपियर कहता है—उसके वचन ही दस्तावेज हैं, और शपथ भविष्य वाणी। उसका प्रेम वास्तविक और विचार निर्मल होते हैं। उसका आँसू हृदय के भेजे हुए दूत हैं और उसका हृदय कपट से इतना दूर रहता है, जितना आकाश से पाताल।

Hope is a loverjs staff, walk hence with that,
And manage it against dispairing thoughts.

इन दो पंक्तियों में भी आशा का वर्णन कर प्रेमी हृदय का एक चित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। कवि कहता है :—

"आशा प्रेमी हृदय की लकुटी है। इसी लकुटी के सहारे वह सदा चलते हैं और निराश होने पर भी आशा के पुल बाँधने का प्रबन्ध कर ही लेते हैं।"

सुकार्य-वर्णन—

How far that little candle throws his beams
So Shines a good deed in a naughty world.

अंधेरे घर में एक छोटी बत्ती भी अत्यधिक प्रकाशवान् प्रतीत होती है। ठीक इसी प्रकार इस दुष्टता-पूर्ण संसार में सुकार्य की आभा बहुत तीक्ष्ण हुआ करती है।

चाँदनी रात—

This night, me thinks, is, but the day light sick
It looks a little paler, tis a day.
Such as the day is when the seen is hid.

"यह चाँदनी रात मालूम होती है, मानो अभी दिन की रोशनी ही बीमार पड़ी हो। यह दिन के उस समय

के समान मालूम होती है, जब सूर्य बादलों से छिप जाता है। कैसी सुन्दर कल्पना है।

ख्याति—

The purest treasure mortal lives afford
Is spotless reputation; that away,
Men are but gilded loam or painted clay.

"इस नाशवान समय से, जो सबसे अमूल्य और उत्कृष्ट पदार्थ प्राप्त होता है, वह मनुष्य का यश है। यदि मनुष्य से यश हटा दिया जाय, तो वह केवल मिट्टी का रँगा हुआ पिण्ड-मात्र ही रह जायगा।"

पुत्र को व्यावहारिक शिक्षा—

Give thy thoughts no tongue.
Nor any unproportion'd thought his act.
Be thou familiar, but by no means vulgar.
The friends thou hast, and their adoption tried.
Grapple them to thy soul with books of steel;
But do not dull thy palm with entertainment,
of such nem-hatched, unfledyed comrade beware
Of entrance to a quarrel; but being in,
Bear it that the opposer may beware of thee.
Give every man thine ear, but few thy voice:
Take each man's censure, but reserve thy
judgement.
This above all—to thine ownself be true;

And it must follow, as the day the day,
Thou caust not then be false to any man.

उक्त पद्य में जो शिक्षा दी गई है, वह इतनी व्यावहारिक और उपयोगी है कि सभी व्यक्तियों को उसे अपनी-अपनी जिह्वा पर रख लेनी चाहिये। पद्य का सारांश देखिये :—

"अपने विचार को प्रकाशित मत कर दो और अपूर्ण विचार को कार्य में परिणत भी न करो। मिलनसार बनो ; पर इतना नहीं कि हास्यास्पद बन जाओ। अपने मित्रों की परीक्षा लेकर छाती से लगाओ। पर प्रत्येक नये मित्र के स्वागत में अपनी जेब खोखली मत करो। किसी झगड़े में मत फँसो और यदि संयोगवश फँस ही जाओ, तो इतना साहस दिखाओ कि तुम्हारा शत्रु भी क्या समझे। प्रत्येक मनुष्य की बात सुनो ; पर अपनी बात किसी से न कहो। प्रत्येक की राय लो ; पर अपने निश्चित विचार को ही मानो। यदि सभी के साथ सच्चा बनना चाहो, तो अपने प्रति सच्चे बने रहो।"

जीवन-व्याख्या

Tomorrow, and tomarrow, and tomarrow,
Creeps in this petty pace from day to day,
To the last syllable of recorded time,
And all our yesterdays have lighted fools—

The way to dusty death. Out, out brief candle,
Life's but a walking shadow; a poor player,
That struts and frets his hour upon the stage,
And then is heard ro more: it is a tale
Told by an idiot, full of sound and fury,
Signifying nothing.

"कल-कल कहकर दिन-प्रति-दिन यह अनन्त समय व्यतीत होता चला जाता है। व्यतीत हुए दिन से लोग मृत्यु के सन्निकट पहुँचते जाते हैं। पर सभी मूर्ख हैं, समझे कौन? जीवन का अल्पायु दीप! बुतो! बुतो!

"जीवन क्या है? चलती हुई छाया है। रंग-मंच के उस दीन पात्र के समान है जो अपने समय तक खूब नाच कूद लेता है और फिर उसकी कहीं सुनाई नहीं पड़ती। यह मूर्खों की कही उस कहानी के तुल्य है, जो भयदायक और भड़कदार तो मालूम होती है; पर जिसे कुछ होने-जाने को नहीं।"

कृतघ्नता—

Blow. blow thou winter wind,
Thou art not so unkind
As main's ingratitude.
They tooth is not so keen
Because thou art not seen
Although thy breath be rude

"शरद ऋतु की ठण्डी हवा, बेरोक बहती चल ; क्यों कि तू उतनी अस्वाभाविक नहीं प्रतीत होती, जितनी मनुष्यों की कृतघ्नता । यद्यपि तेरी गति तीव्र है, तथापि तेरे दाँत तीक्ष्ण इसलिये प्रतीत नहीं होते, कि तू अदृश्य रहती है ।"

दया

The quality of Mercy is not strained
If droppeth as the gentle rain from heaven
Upon the place beneath: it is twice blessed,
If blesseth him that giues, and him that takes

×× × ××

जबरन किसी से दया नहीं कराई जा सकती । दया तो वर्षा के उस जल के समान है, जो स्वभावतः आकाश से पृथ्वी पर गिरता है । उसके दोहरे गुण हैं और वह यही कि दयाकरने वाले और जिसपर दया की जाती है, दोनों अत्यानन्दित होते हैं ।

कल्पना-शक्ति —

The lcmatic, the lover and the poet,
Are of imagination all compact,
One sees more devils than vast hells can hold
That is the madman: the lover, all is frantic,
Sees Helen's beauty in a brow of Egypt:
The poets' eye, in a fine frenzy rolling,

Doth glance from heaven to earth, from earth to heaven,
And as imagination bodies forth
The forms of things buknown, the poet's pen
Turns them to shapes, and gives to airy nothing
A local habitation and a name-

पागल, प्रेमोन्मत्त और कवि ये तीनों मानो कल्पना से ही बने हैं। पागल बृहत्-नरकागार के भयानक कष्टों से भी अधिक कष्टों की कल्पना किया करता है। प्रेमोन्मत्त जन कुरूप-से-कुरूप वस्तु या व्यक्ति में भी उत्कृष्ट सौन्दर्य की कल्पना करता है। और कवि का तो कहना ही क्या, उसकी कल्पना आकाश से पाताल तक दौड़ लगाया करती है और ज्यों ही किसी अज्ञात वस्तु की कल्पना हुई कि कवि की कलम झट उसे रूप दे देती है, निरा काल्पनिक ही नहीं रहने देती।

मानवी-मनोरथ की असमर्थता—

We ignorant of ourselve
Beg often our own harnes, which the wise powers
Deny us for our good; so find we profit,
By losing of our prayers.

अज्ञानता के कारण प्रायः हम ईश्वर से ऐसी वस्तुओं की प्रार्थना करते हैं, जिनसे हमारी हानि होने की होती है; पर हमारी भलाई का ख्यालकर ईश्वर हमारी प्रार्थना

अस्वीकृत कर देता है। इस तरह अपनी प्रार्थना व्यर्थ कर हम लाभ ही प्राप्त करते हैं। ईश्वर जो करता है, वह हमारी भलाई ही के लिये।"

वियोग के घंटे गिनना—

What ! keep a week away ? Seven days and nights
Eight score light hours ? and lover's absent hours
More tedions than the dial eight score times ?
O weary reckoning !

"क्या ! एक सप्ताह और अलग ? पूरे सात दिन और सात रात ? एक सौ अड़सठ घंटे की जुदाई ? आह ! कितना कष्टकर गणना है। धूप-घड़ी के एकसौ साठबार की आवाज को गिनने से भी यह अधिक दुःखद है।"

शेक्सपियर महान् कवि तो था ही और उसकी कविता भी उत्कृष्ट श्रेणी की हुई है, जिसके परिचायक स्वरूप ऊपर कुछ उदाहरण दिये गये हैं ; पर उसके गद्य लेख भी इतने उत्तम दरजे के हुए हैं कि देखते ही बनता है। इच्छा होगी, यदि उसकी कलम पाऊँ, तो चूम लूँ। अतः यहाँ दो-एक उदाहरण गद्य लेख के भी दिये जाते हैं:—

मनुष्य—

What a piece of work is man ! How noble in reason ! how infinite in faculties, in form and moving; how express and admirable ! in action

how take an angel ! in apprehvnsion how like a god ! the beauty of the world ! the 'parogon 'of animals !

"मनुष्य ईश्वर की कैसी कीर्ति है ! अहा, कैसा सुन्दर विवेक है ! गुणों की तो खान है ! आकार-प्रकार में कितना सुन्दर और प्रशंसनीय है ! कार्य्य में देवदूत के समान और समझ में तो देवता ही के तुल्य है। सचमुच में यह संसार का सौन्दर्य है ! जीवन का आदर्श है।"

सादा और ईमानदार गड़रिया

Sir I am a tr1e labourer: I earn that I eat, get that I wear ; owe no man hate, enevy no man's happined; glad of othermen's good, content with my harm; and the greatest of my pride is to see my ewes graze and my lambs suck,

"महाशय, मैं सच्चा मजदूर हूँ। जो मैं उपार्जन करता हूँ, वही खाना खाता हूँ, और जो मिलता है वही पहनता हूँ। किसी से घृणा नहीं करता और किसी के सुख से ईर्ष्या भी नहीं रखता, दूसरे की भलाई से आनन्दित होता हूँ और अपनी हानि पर भी सन्तुष्ट रहता हूँ और सबसे गौरव और आनन्द की बात तो मेरे लिये यह है कि मैं अपनी भेड़ों को चरते हुए और उनके बच्चों को दूध पीते हुए देखता हूँ।"

उदासी के प्रभेद

I have mither the scholar's melancholy which is emulation: nor the musician's which is fantastical; nor the courtier's, which is proud nor the soldier's, which is amlictions; nor the lawer's, which is politic; nor the ledy which is nice; nor the lover's, which is all these.

मुझे विद्वानों की उदासी नहीं है, क्योंकि वह स्पर्द्धा है; गवैयों की उदासी भी नहीं क्योंकि वह मनमौजी और विचित्र है। दरबारियों की उदासी भी नहीं, क्योंकि वह घमंड-युक्त है सिपाहियों की उदासी भी नहीं, क्यों कि वह लिप्सा-युक्त है, वकीलों की भी नहीं क्योंकि वह नीति पूर्ण है, रमणी की भी नहीं, क्योंकि वह क्षणिक और तुच्छ है, और प्रेमियों की भी नहीं, क्योंकि उस में उक्त सभी गुण हैं।

ब्रुटस का व्याख्यान

If there be any in this assembly, any dear friend of Caesar's, to him I say that Brutus's love to Caesar was no less than his. If then that friend demand why Brutus rose against Caesar, there is my answer——Not that I loved caesar less, but I loved Rome more. Had you rather

Caesar were dead, to live all free men ? As Caesar loved me, I weep for him as he was fortunate, I rejoice at it, as he was valiant, I honour him: but as he was ambitions, I slew him. There is tears for his love ; joy for his fortune ; honour for his valaar and death for his ambition Who is here so base that would be a bondman ? If any, speak: for him have I offended. Who is here so rude that would not be a Roman ? If any, speak, for him have I offended. Who is here so vile that will not love his country. If any, speak, for him have I offended.

यह व्याख्यान इतना सुन्दर और भाव मय है कि पाठक इसका अनुभव स्वयं कर सकते हैं। ब्रुटस के शब्दों में ; नहीं नहीं, ब्रुटस के मुख से कहलाये हुए शेक्सपियर के इन शब्दों में वीरता, स्वतन्त्रता और मातृभूमि के लिये भक्ति इतनी कूट-कूटकर भरी हुई है कि हम इन शब्दों पर मुग्ध हैं। सच पूछिये तो इन वाक्यों को बार-बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती और छोड़ने का मन नहीं करता।

"यदि इस सभा में सीजर का कोई मित्र हो, तो उसे मैं कहूँगा कि सीजर के प्रति उसके प्रेम से मेरा प्रेम कम न था। ऐसी दशा में यदि वह मुझसे प्रश्न करे कि जब ऐसी बात है, तो आपने सीजर को क्यों मारा, तो मेरा उत्तर यह होगा—"यह बात नहीं है कि मैं सीजर

को कम प्यार करता था, पर यथार्थ बात यह थी कि मैं रोम को अधिक प्यार करता था। क्या आप सीजर को जीते रखकर सभी को गुलाम बनाना चाहते या सीजर की मृत्यु से सभी स्वतन्त्र होगये हैं, यह पसन्द करते हैं? चूँकि सीजर ने मुझे प्यार किया, अतः मैं उसके लिये रोता हूँ। चूँकि वह भाग्यशाली था, मैं उस पर आनन्दित होता हूँ, चूँकि वह वीर था, मैं उसका आदर करता हूँ; परन्तु चूँकि वह लोभी था, मैंने उसे मार डाला। उसके प्रेम के लिये आँसू है, भाग्य के लिये आनन्द है, वीरता के लिये आदर है और लालच के लिये मृत्यु। यहाँ ऐसा कौन नीच है जो उसकी हामी भरेगा। अगर कोई ऐसा है, तो मैंने ठीक उसका दिल दुखाया है। यहाँ ऐसा कौन कठोर है जो रोमन नहीं होना चाहता? यदि कोई ऐसा है, तो ठीक मैंने उसका दिल दुखाया है। ऐसा कौन नीच यहाँ होगा जो अपनी मातृ-भूमि को प्यार नहीं करेगा? यदि कोई है, तो ठीक मैंने उसका दिल दुखाया है—

शेक्सपियर के ग्रन्थ मनोहर वाक्यों और कहावतों से भरे हैं। कुछ ऐसे वाक्य और कहावत नीचे दिये जाते हैं।

'Present fears are less than horrible imaginings'

(१) उपस्थित आपत्ति कल्पना के कष्ट से कम भयावह होती है।

'Words to the heat of deeds too cold breath give'

(२) बोलने से काम करने का जोश ठंडा पड़ जाता है।

'The night is long that never finds the day'

(३) बड़ी-से-बड़ी रात का भी अन्त होता ही है। बड़े-से-बड़ा कष्ट भी अन्त में हट जाता है।

'Purpose is but slave to memory'

(४) 'विचार स्मृति का गुलाम है।'

'Best safety lies in fear'

(५) 'लोग सावधान रहने से बहुत निरापद रहते हैं।'

One may smile and smile and be a villain'

(६) हँसते हुए चेहरे का हृदय भी शैतान हो सकता है।

There is nothing either good or bad, but thinking makes it so.

(७) 'मन एव मनुष्याणाम् कारणम् बन्ध मोक्षयोः।'

When sorrones come, they come not single spies, but in battalions.

(८) 'विपत्ति अकेली नहीं आती।'

Lomliness is young ambition's ladder.

(९) नम्रता ही उन्नति की पहली सीढ़ी है।

Beauty provoketh thieves sooner than gold.

(१०) स्वर्ण से सौंदर्य्य अधिक आकर्षक होता है।

The miserable have no other medicine,

but only hope.

(११) दुःखी व्यक्तियों की एक ही दवा है—आशा।

Love sought is good but given unsought is better.

(१२) 'प्रार्थना के पश्चात् जो प्रेम मिलता है वह तो अच्छा है; पर उससे भी अच्छा वह प्रेम है, जो बिना माँगे मिलता है।"

Prosperity is the very bond of love;
Whose fresh complexion and whose heart together
Affiiction alters.

(१३) सुख के दिन प्रेम को बढ़ाते हैं—सुख के दिन में प्रेमी अधिकाधिक प्रेम करने लगता है; पर दुःख के दिन आते ही प्रेमी का बदन और हृदय दोनों बदल जाते हैं।

How quickly nature falles into revolt
When gold becomes her object!

(१४) ज्यों ही द्रव्योपार्जन मुख्य उद्देश्य हुआ कि लगे फूट और द्वेष पैदा होने।

True hope is swift, and flis with swallone's wings,
Kings it makes gods, and meaner creature kings.

(१५) सच्ची आशा बहुत तीव्र गति की होती है। क्योंकि यह क्षण ही में राजाओं को देवताओं और तुच्छ प्राणियों को राजाओं में परिवर्तित कर देती है।"

आनन्द-पुस्तक-माला-कार्यालय

आज कई वर्ष हुए, हमने कुछ मित्रों के अनुरोध से उपर्युक्त पुस्तक-माला की संस्थापना की है। हर्ष की बात है कि साहित्य-प्रेमियों ने हमारी पुस्तकें खरीद कर खूब सहायता की, हमारा उत्साह बढ़ाया और पुस्तक-प्रकाशन के लिए हम दृढ़ हो गये। हमारी पुस्तक-माला का स्थायी ग्राहक-शुल्क केवल ॥) आठ आना है। माला की पुस्तकों की छपाई-सफाई आदि पर खूब ध्यान दिया जाता है। निम्न-लिखित पुस्तकें अबतक प्रकाशित हुई हैं—

१—सती कमला

(लेखक—पं० दशरथ शर्मा)

यह एक सामाजिक मौलिक उपन्यास है। इसमें ठेठ दिहात का चित्र अङ्कित किया गया है। स्वदेश-प्रेम की सुलगती हुई आग है। कहीं कहीं पर बड़ा ही मर्म-स्पर्शी दृश्य है। इसकी इतनी माँगे आईं, कि कुछ ही दिनों में पहली आवृत्ति समाप्त हो गई। दूसरे संस्करण के लिये कोशिश की जा रही है। मूल्य ।।।)

आनन्द-पुस्तक-माला-कार्यालय, पूर्णिया

२—बाल्मीकि का अपने काव्य में आत्म-प्रकाश

(अनुवादक—कुमार गङ्गानन्दसिंह, एम० ए०, एम० एल० ए०)

श्रीयुत पं० चिरञ्जीव झा 'चिरंजीव' लिखते हैं,—"यह पुस्तक बरुआ महोदय के एक अँगरेजी लेख का अनुवाद है। अनुवाद की उपयोगिता मान्य कुमार साहब के नाम से ही प्रमाणित है। पुस्तक की विवेचन प्रणाली प्रशंसनीय है। भाषा शुद्ध एवं सरल है ; परन्तु भावों की गम्भीरता के कारण कहीं-कहीं वह दुर्बोध हो गई है। अँगरेजी पद्य के अनुवाद हिन्दी-पद्य में ही किये गये हैं, इससे पुस्तक का सौंदर्य बढ़ गया है। इतनी अच्छी पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ आने हैं।"

३—भेदभरी सुन्दरी

(लेखक—स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा)

श्रीयुत जयनारायण सिंह लिखते हैं—"यह एक जासूसी उपन्यास है। इसमें मि० ब्लेक के अनूठे कारनामे हैं। जासूसी उपन्यास-प्रेमी मि० ब्लेक से अवश्य ही परिचित होंगे। पहले तो इसके पढ़ने में मन नहीं लगता ; परन्तु पीछे इतनी दिलचस्पी मालूम होती है कि किताब खतम हो जाने पर भी घंटों छाती पर पड़ी रह जाती है। शर्माजी की यह खूबी है।" ।||≈)

४—नवाबी के अन्तिम दिन

(अनुवादक—पं० प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त')

श्रीयुत मंगलप्रसादसिंहजी लिखते हैं—"सहृदय मुक्त जी हमारे मित्रों में-से एक हैं। उनमें एक अनोखी प्रतिभा है। इस अनुवाद-पुस्तक में भी उनकी प्रतिभा प्रदर्शित हुई है। नवाबी के दिनों के सुखमय शब्द-दृश्य अन्त में बड़े ही करुणाजनक हो गये हैं × × × संसार की क्षणभंगुरता का यह नमूना है। अनुवाद की भाषा तो बड़ी सरल है; परन्तु संशोधन की कुछ अशुद्धियाँ खटकती हैं। इससे पुस्तक की उपादेयता में कमी नहीं आई इसे पढ़ते ही नवाबी के दिनों का नंगा चित्र आँखों के सामने नाचने लगता है। आप अवश्य ही एक बार सिहर उठेंगे!" मूल्य १।) रु० रेशमी जिल्द १।।।) रु०

५—गुलाब की कलियाँ

(लेखक—ठाकुर लक्ष्मीनारायणसिंह 'सुधांशु')

भूत-पूर्व मतवाला-मंडल के माधुरी उपासक, सरस-साहित्य शिल्पी, हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजनसहायजी लिखते हैं—"इस पुस्तक में सुधांशुजी ने अपनी अप्रकाशित नव कहानियों का संग्रह किया है। कहानियाँ प्रायः श्रृंगार-रसमयी हैं। उनकी भाषा में ओज और प्रसाद

है। × × × वर्णनशैली में रस-मर्मज्ञता का अच्छा पुट पड़ा है। कहीं-कहीं यौवन मद का लबालब प्याला ऐसा छलक पड़ा है कि चित्त रस-सिक्त हो जाता है। × × × नवयुवकों के लिए सभी कहानियों में एक विचित्र आकर्षण है।"

कविवर लाला भगवानदीनजी, लिखते हैं— 'प्रिय 'सुधांशु' तुम्हारी पुस्तक मैं ध्यान पूर्वक पढ़ गया। सच तो यह है, कि तुम्हारी स्नेहमयी ललित रचना पर मेरी सम्मति पक्षपात-रहित नहीं हो सकती।"

कवि-सम्राट् साहित्य-रत्न पं० अयोध्यासिंह उपाध्यायजी 'हरिऔध' लिखते हैं—"मैंने गुलाब की कलियाँ"—नामक पुस्तक पढ़ी। यह पुस्तक बड़ी सहृदयता से लिखी गई है भाषा प्रौढ़ और चलती हुई है। कहीं-कहीं पुस्तक में भावों के बड़े सुन्दर चित्र अङ्कित हैं पुस्तक को पढ़कर यह नहीं ज्ञात होता कि वह किसी लेखक की आदिम रचना है। प्रायः उसमें प्रौढ़ लेखनी का चमत्कार ही दृष्टिगत होता है। मैं सुधांशुजी का साहित्य-क्षेत्र में अभिनन्दन करता हूँ, और आशा करता हूँ कि वे मातृ-भाषा का भाण्डार उत्तमोत्तम रत्नों से पूर्ण करने में सदैव संलग्न रहेंगे।"

पाण्डेय अवधबिहारीजी, हिन्दी-भूषण लिखते हैं—"सुधांशु भाई, तुम्हारी 'गुलाब की कलियाँ' मिली। इसकी सजधज देखकर लोभी मन आखिर लट्टू हो ही गया। पढ़ते-पढ़ते कलियाँ खिल गईं। बड़ा मज़ा आया। यार, हो तुम बड़े रसीले। सचमुच तुम्हारा दिल प्रेम से लबालब है। ज़रा रुक-रुक कर दिल खोलो; नहीं तो मनचले भौंरे तुम्हें तंग कर डालेंगे।"

सुप्रसिद्ध औपन्यासिक श्रीयुत प्रेमचंदजी लिखते हैं—प्रियवर, 'गुलाब की कलियाँ' मिल गई। सुगंध भी ऊपर से आई।... ....

डा० गंगानाथजी झा, वाइस-चांसलर, प्रयाग-विश्व-विद्यालय, लिखते हैं—"प्रिय सुधांशु जी, 'गुलाब की कलियाँ' मिली। पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है।"

आवरण-पृष्ठ पर सुन्दर तिरंगा चित्र! मनोमोहक छपाई सफाई! मूल्य केवल ।।।) सजिल्द १।)

६—काला पहाड़

(अनुवादक—पं० जनार्दन मिश्र "परमेश")

इस पुस्तक को पढ़िए, और हिन्दूधर्म की महत्ता को स्वीकृत कीजिए।

उपन्यास और कहानियाँ

प्रतिज्ञा (प्रेमचन्द—नया उपन्यास)	१॥)
रंग-भूमि दो भाग (प्रेमचन्द—उपन्यास)	५)
मंगल-प्रभात ('हृदयेश'—उपन्यास)	५)
काया-कल्प (प्रेमचन्द—उपन्यास)	३॥)
वेणी—('विमल'—कहानियाँ)	१॥)
गुलाब की कलियाँ—('सुधांशु'—कहानियाँ)	॥)
पश्चात्ताप ('कैरव'—उपन्यास)	॥=)
वनमाला ('हृदयेश'—कहानियाँ)	३)
भेद-भरी सुन्दरी (ईश्वरी जी—उपन्यास)	॥≈)
प्रेमाश्रम (प्रेमचन्द—उपन्यास)	३॥)
प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द—कहानियाँ)	१॥)
मनोरमा ('हृदयेश'—उपन्यास)	२॥)
रस-रंग ('सुधांशु'—कहानियाँ)	॥)
नन्दन-निकुञ्ज (हृदयेश'—कहानियाँ)	१॥)
नवाबी के अन्तिम दिन ('मुक्त'—उपन्यास)	१)
प्रेम-पचीसी (प्रेमचन्द—कहानियाँ)	२॥)
भ्रातृ-प्रेम ('सुधांशु—उपन्यास)	≋)
सेवा-सदन (प्रेमचन्द—उपन्यास)	२॥)
आशा पर पानी ('विमल'—उपन्यास)	॥)

सब प्रकार की हिन्दी-पुस्तकें मिलने का पता—

आनन्द-पुस्तकमाला-कार्य्यालय, पूर्णिया